



भारत का राजपत्र The Gazette of India

सी.जी.-डी.एल.-अ.-26052020-219552
CG-DL-E-26052020-219552

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 1453]

नई दिल्ली, शुक्रवार, मई 22, 2020/ज्येष्ठ 1, 1942

No. 1453]

NEW DELHI, FRIDAY, MAY 22, 2020/JYAISHTHA 1, 1942

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 22 मई, 2020

का.आ. 1616(अ).—मंत्रालय की प्रारूप अधिसूचना का.आ. 3882(अ.), दिनांक 13 दिसम्बर, 2017, के अधिक्रमण में, अधिसूचना का निम्नलिखित प्रारूप, जिसे केन्द्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) की धारा 3 की उपधारा (2) के खंड (v) और खंड (xiv) तथा उपधारा (3) के साथ पठित उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, जारी करने का प्रस्ताव करती है, पर्यावरण (संरक्षण) नियमावली, 1986 के नियम 5 के उपनियम (3) की अपेक्षानुसार, जनसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है; जिनके उससे प्रभावित होने की संभावना है, और यह सूचित किया जाता है कि उक्त प्रारूप अधिसूचना पर, उस तारीख से, जिसको इस अधिसूचना को अंतर्विष्ट करने वाले भारत के राजपत्र की प्रतियां जनसाधारण को उपलब्ध करा दी जाती हैं, साठ दिन की अवधि की समाप्ति पर या उसके पश्चात् विचार किया जाएगा;

ऐसा कोई व्यक्ति, जो प्रारूप अधिसूचना में अंतर्विष्ट प्रस्तावों के संबंध में कोई आपत्ति या सुझाव देने का इच्छुक है, वह विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर, केन्द्रीय सरकार द्वारा विचार किए जाने के लिए, अपनी आपत्ति या सुझाव सचिव, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, इंदिरा पर्यावरण भवन, जोर बाग रोड, अलीगंज, नई दिल्ली-110003 को लिखित रूप में या ई-मेल esz-mef@nic.in पर भेज सकता है।

प्रारूप अधिसूचना

नंधौर वन्यजीव अभयारण्य उत्तराखंड के दो जिलों अर्थात् नैनीताल और चम्पावत जिलों में स्थित है, और इसका नाम नंधौर घाटी और नंधौर नदी से रखा गया है जो कि घाटी के अंदर बहती है और नंधौर वन्यजीव अभयारण्य उत्तर अक्षांश 28°56'29.35" से 29°16'39.79" और पूर्व देशांतर 79°33'3.82" से 80°10'0.03" के बीच स्थित है और इसका क्षेत्रफल 269.95 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है;

और, इस बड़े भू-दृश्य पश्चिम की यमुना नदी और पूर्व की ओर नेपाल में भागमती नदी है;

और, यह भू-दृश्य तराई-दौर सवाना पारिस्थितिकी-क्षेत्र का प्रतिनिधि है, जो दक्षिणी ढलानों में हिमालय की ओर जाता है और भू-दृश्य का संपूर्ण क्षेत्र राष्ट्रीय और वैश्विक दोनों स्तरों पर, जैव विविधता के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में पहचाना जाता है;

और, अभयारण्य में मुख्य वनस्पति कैसिया फिस्टुला (अमलताश), आइलैंथस एक्सेलसा (अरु), मंगिफेरा इंडिका (आम), स्पोडियास पिन्नाटा (आमरा), इम्बेलिका ओफिसिनैलिस (आवला), राइटिया टोमेंटोसा (इंड़ाजो), टैमरिंडस इंडिका (इमली), स्टेरुलिया विल्लोसा (उदाल), बउहीनिया वारिइगाटा (काछमार), फ्लैकोर्टिया इंडिका (कटैल [कंडाड़]), जिजिफस ज़ायलोना (कैथबर), हापलोहरागमा अडेनाफल्लुम (कथ सगौन), मरीका सपिदा (काफल), बुकानानिया लंजान (कथभिलावा), बुकानानिया लतीफोलिया (प्यालचारोजी), गमेलीना अरबोरिया (कमहार [गमहार]), अलबिजिया ओडोरातिसीमा (कालासिरीस), अकैशिया फरनेसिअना (किंकर), केरिया आबोरिया (कुंभी), फिकस क्यूनिया (कुमिया), स्वलेइचेरा ओलेओसा (कुसुम), होलाहेंना अंटीडयसेटैरीका (कुडा), फोइबे लांकेओलाटा (ककरा), मुचीलुस अडोराटीसीमा (कओला), होलोप्टेलेया इंटरग्रीफोलिया (कंजु), केल्टिस टेट्रेंड्रा (क्रिच), बउहीनिया मालाबरिका (खतवा), बेरिदेलिया रतुसा (खजा), फिकस इफेकटोरिया, फिकस रूमफि (खबर, पकार), स्पिउम इंसिगना (खैइना), अकैशिया कटेचु (खेर), बउहीनिया पुरपुरिया (खेरवाल्ल), तरेविया नुडीफलोरा (कुटेल), फिकस राकेमोसा (गुलार), बोइहमारिया रूगुलोसा (गेथी), बेरिदेलिया रतुसा (गोली [इकडांया]), इहरेटिया लइविस (चमरोह[इचोडा]), कैसेअरिया इल्लीप्टीका (चिल्ला), वेंडलांडिया एक्ससेटा (चिला [चिचुनिया]), डीप्लोकनेमा बुतयराकेअ (चुरा), पिनस रोकसबर्गी (चिर), एल्टोनिया स्वेलारिस (चितवन [चिउन]), सियाजियम क्यूमिनी (जामुन), ट्रेमा ओरिएंटलिस (जीवंती), पुतरांजीवा रोकबुरगली (जूटी), टमारिक्स डीओइका (झाउ), लेन्नेया कोरोमांडेलिका (झींगन), चित्रामोसुम टमाला (दालचिनी[तेजपत्ता]), गरूगा पिन्नाटा (टिटमिरा [खरपत]), मिलिउसा वेलुटीना (डोम्साल), बुटेया मोनोसपर्मा (धाक), इलाइओटैडरोन गलाउकुम (धिबरी), स्पिउम सेबिफेरुम (टरचारबि), ओरोक्लुम इंडिकम (टरलौ[टसरिया]), कोक्कुलुस लउरिफोलिउस (टिलफोरा), फिकस रोकबुरघी (तिमला), टोना किलिअट, केडरेला टौना (तुन), डायोस्पायर टोमेंटोज (टांडु), गार्डेनिया टर्गिडा (थानेला), ग्रेविया इलास्टीका (थमान), वुडफोर्डिया फ्रेटिकोसा (धउला), एरिथ्रिना सुबेरोसा (धौलाधाक), लेगरोस्ट्रोइमिया परविफलोरा (धौरी), अजाडिराचटा इंडिका (नीम), स्टेरेओस्परमुम सुअवेओलेंस (पडाल), बिस्चोफिया जवानिका (पानिसेमाल), डालबेरगिया लोंकेओलारिया (पास्सि [बंधार]), फिकस रेलिगिओसा (पीपल), कीडिया चालयचिना (पुला[पत्ता]), बरोउस्सोनेटिया पपयरिफेरा (पेपर मालवारी), मित्राग्याना प्रवीफोलिया (फलदु), ग्रेविया हइनेसिना (फरासेन), अकैशिया निलोटिका (बबूल), टर्मिनलिया बेल्लेरिका (बहेरा), मेलिया अजेदेराच (बकेइन), क्रेटकवा रेलिगिओसा (बरना [बरुना]), फिकस बेंगलेंसिस (बंराथा [बरगद]), अनोगेइस्सुस लतिफोलिया (बाकाली), पटोरोकारपुस मारसुपियम (बिजयसाल), फिकस रूचादेंस (बेतुली), रोडोडेंड्रोन अबोरिम (बुरास), क्रेरकस लेउकोटरिचोफोरा (बांज), एगल मार्मेलोस (बेल), जिजिफस मौराटिओना, जिजिफस जुजुबा (बेर), हाइमेनोडिक्टीऑन एक्सेलसुम (बोरंग), सेमेकार्पस एनाकार्डियम (भिलावा), ग्रेविया ओप्पोसिटिफोलिया (भिमल), मधुका इंडिका (महुवा), जिजिफस क्यलोयरा (मकिदा), लिअसेइया घुतिनोसे (मइदा), रानदिया इमेटीरुम (मनिंफाल्ल), इयकालयपतुस हायबरिड (इयकालयपतुस [सिफेदा]), माल्लोटस फिल्लिपेंसिस (रोहानी), कोरडिया डिचोटोमा, कोरडिया मयक्या (लसोरा), कसैरिया ग्र्रावेओलेंस (लालचिला), मोरुस अलबा (सहतुत [तुतारी]), डालबर्गिया सिसो (शीसु [शीसम]), क्यलोसमा लोंगिफोथुम (शाल्लु), सहोरिया रोबुस्ता (साल), ओउगिनिया ओओजेनिनेसिस (सादान), टेक्टोना ग्रांडिस (साओगोन), अल्विजिया चिनेंसिया (सिरीस [काला]), एल्विजिया प्रोकेरा (सिरीस [सफेद]), मोरिंगा ओलीफेरा (सैजना), बोंबक्स किइबा (सेमल), टर्मिनलिया अलाटा (सैन [असहना]), न्यक्टेन्थस अरबोरट्रिस्टिस (हेरसरिंगार), अदीना कोर्डिफोलिया (हलदु), टर्मिनलिया चेबुला (हारा [हरड]), आदि उपलब्ध है;

और, इस क्षेत्र में पाए जाने वाले बड़े जीवजंतु में बाघ, हाथी, तेंदुआ, रीछ और कई शाकाहारी पशु बहुत महत्वपूर्ण हैं और इस क्षेत्र में जीवजंतुओं की विविधता के समान ही वनस्पति की विविधता पाई जाती है, जिसमें इस विविधता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि इस क्षेत्र में चैंपियन और सेठ वर्गीकृत वनों के 27 प्रकार और उप प्रकार हैं;

और, नंधौर वन्यजीव अभयारण्य से जीवजंतु रेसस मैकाक (मकाका मुलाट्टा), सामान्य लंगूर (प्रेबयतीस इन्तेल्लुस), बनबिलार (फेलिस चाउस), बाघ (पैंथेरा टाइगरिस), सामान्य नेवला (हर्पस्टेस एडवर्डसी), छोटा भारतीय नेवला (हर्पस्टेस अउरोपुनकटतुस), सियार (कैनिस् ऑरियस), भारतीय लोमड़ी (वुल्प्स बेंगलेंसिस), रीछ (मेलर्सस अरसिनस), छोटा

भारतीय मुसंग (*विवर्रिकुला इंडिका*), ब्लू बुल (*बोसेलाफस ट्रागोकेमेलुस*), मुंजक (*मुनटीक्स मुनतजक*), चित्तीदार हिरण (*एक्सिस एक्सिस*), सांभर (*रुसा यूनीक्लोरो*), बनैला सूअर (*सस स्क्रोफा*), फाइव स्टीपेड पाम गिलहरी (*फुनाम्बुलुस पेन्नांटी*), भारतीय फील्ड माउस (*मुस्बोदुगा*), सामान्य हाउस रेट (*रट्टुस रट्टुस*), सामान्य हाउस माउस (*मुस मुस्कलुस*), साही (*हिस्ट्रीक्स इंडिका*), ग्रे मुसक शेखर (*सुनकस मुरीनस*), रूफोस्टेलड खरगोश (*लेपुस निगरिकोल्लीस रुफिकाउडनुस*), फ्लाइंग लोमडी (*पटेरोपुस गिंगटुस*), फ्रूईट बेत (*रौसेट्टुस लेसचेनॉल्टी*), गोरल (*नेमोरहेडुस गोरल*), भारतीय साल (*मानिस क्रैसिकाउडाटा*), एशियन हाथी (*इलेफस मैक्सिमस*), सामान्य पाम मुसंग (*पराडोक्यरुस हेरमाफरोडिटस*), रेड गिअंत फ्लाइंग गिलहरी (*पेटोरिस्टा पेटोरिस्टा*), हिसपिड खरगोश (*कैरोलांगुस हिसेलडस*), भारतीय खरगोश (*लेपस निगरिकोल्लीस*), शेरोव (*कापरिकोर्निस सुमातराईसिस*), आदि अभिलिखित किए गए हैं;

और, नंधौर वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर के क्षेत्र को, जिसका विस्तार और सीमाएं इस अधिसूचना के पैराग्राफ 1 में विनिर्दिष्ट हैं, पारिस्थितिकी, पर्यावरणीय और जैव-विविधता की दृष्टि से पारिस्थितिकी संवेदी जोन के रूप में सुरक्षित और संरक्षित करना तथा उक्त पारिस्थितिकी संवेदी जोन में उद्योगों या उद्योगों की श्रेणियों के प्रचालन तथा प्रसंस्करण को प्रतिषिद्ध करना आवश्यक है;

अतः, अब, केन्द्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) नियमावली, 1986 के नियम 5 के उपनियम (3) के साथ पठित पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) की उपधारा (1) तथा धारा 3 की उपधारा (2) के खंड (v) और खंड (xiv) एवं उपधारा (3) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, जिला नैनीताल और चम्पावत के उत्तराखंड राज्य में नंधौर वन्यजीव अभयारण्य, की सीमा के चारों ओर 0.7 किलोमीटर से 15.0 किलोमीटर तक विस्तारित क्षेत्र को पारिस्थितिकी संवेदी जोन (जिसे इसमें इसके पश्चात् पारिस्थितिकी संवेदी जोन कहा गया है) के रूप में अधिसूचित करती है, जिसका विवरण निम्नानुसार है, अर्थात् :-

- 1. पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार और सीमाएं:-**(1) पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार नंधौर वन्यजीव अभयारण्य की सीमा के चारों ओर 0.7 किलोमीटर से 15.0 किलोमीटर तक विस्तृत है और पारिस्थितिकी संवेदी जोन का क्षेत्रफल 540.267 वर्ग किलोमीटर है। पारिस्थितिकी संवेदी जोन के क्षेत्र का विवरण नीचे दिया गया है:

हल्द्वानी वन संभाग	: 270.175 वर्ग किलोमीटर;
चम्पावत वन संभाग	: 100.880 वर्ग किलोमीटर;
तराई पूर्व वन संभाग	: 167.103 वर्ग किलोमीटर;
राजस्व क्षेत्र के 2 ग्राम	: 1.9518 वर्ग किलोमीटर;
वन पंचायत क्षेत्र	: 0.1574 वर्ग किलोमीटर.

(2) नंधौर वन्यजीव अभयारण्य और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा का विवरण **उपाबंध-I** के रूप में संलग्न है।

(3) सीमा विवरण और अक्षांशों और देशांतरों के साथ पारिस्थितिकी संवेदी जोन का सीमांकन करते हुए नंधौर वन्यजीव अभयारण्य के मानचित्र **उपाबंध-IIक, उपाबंध-IIख, उपाबंध-IIग, उपाबंध-IIघ और उपाबंध-IIङ** के रूप में संलग्न है।

(4) नंधौर वन्यजीव अभयारण्य और पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा के भू-निर्देशांकों की सूची **उपाबंध-III** की सारणी **क** और सारणी **ख** में दी गई है।

(5) मुख्य बिंदुओं के भू-निर्देशांकों के साथ प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले ग्रामों की सूची **उपाबंध-IVक और उपाबंध-IVख** के रूप में संलग्न है।

2. पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए आंचलिक महायोजना:-(1) राज्य सरकार, द्वारा पारिस्थितिकी संवेदी जोन के प्रयोजन के लिए, राजपत्र में अंतिम अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से दो वर्ष की अवधि के भीतर, स्थानीय व्यक्तियों के परामर्श से और इस अधिसूचना में दिए गए अनुबंधों का पालन करते हुए, राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदनार्थ एक आंचलिक महायोजना बनाई जायेगी।

(2) राज्य सरकार द्वारा पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए आंचलिक महायोजना इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट रीति से तथा प्रासंगिक केंद्रीय और राज्य विधियों के अनुरूप तथा केंद्रीय सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देशों, यदि कोई हों, के अनुसार बनायी जाएगी।

(3) आंचलिक महायोजना में पारिस्थितिकी और पर्यावरण संबंधी सरोकारों को शामिल करने के लिए इसे राज्य सरकार के निम्नलिखित विभागों के परामर्श से बनाया जाएगा, अर्थात्:-

- (i) पर्यावरण;
- (ii) वन और वन्यजीव;
- (iii) कृषि;
- (iv) राजस्व;
- (v) शहरी विकास;
- (vi) पर्यटन;
- (vii) ग्रामीण विकास;
- (viii) सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण;
- (ix) नगरपालिका;
- (x) पंचायती राज; और
- (xi) लोक निर्माण विभाग।

(4) जब तक इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट न हो, आंचलिक महायोजना में वर्तमान में अनुमोदित भू-उपयोग, अवसंरचना और क्रियाकलापों पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया जाएगा तथा आंचलिक महायोजना में सभी अवसंरचनाओं और क्रियाकलापों में सुधार करके उन्हें अधिक दक्ष और पारिस्थितिकी-अनुकूल बनाने की व्यवस्था की जाएगी।

(5) आंचलिक महायोजना में वनरहित और अवक्रमित क्षेत्रों के सुधार, विद्यमान जल निकायों के संरक्षण, आवाह क्षेत्रों के प्रबंधन, जल-संभरों के प्रबंधन, भू-जल के प्रबंधन, मृदा और नमी के संरक्षण, स्थानीय जनता की आवश्यकताओं तथा पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण के ऐसे अन्य पहलूओं की व्यवस्था की जाएगी जिन पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

(6) आंचलिक महायोजना में सभी विद्यमान पूजा स्थलों, ग्रामों एवं शहरी बस्तियों, वनों की श्रेणियों एवं किस्मों, कृषि क्षेत्रों, ऊपजाऊ भूमि, उद्यानों एवं उद्यानों की तरह के हरित क्षेत्रों, बागवानी क्षेत्रों, बगीचों, झीलों और अन्य जल निकायों की सीमा का सहायक मानचित्र के साथ निर्धारण किया जाएगा और प्रस्तावित भू-उपयोग की विशेषताओं का ब्यौरा भी दिया जाएगा।

(7) आंचलिक महायोजना में पारिस्थितिकी संवेदी जोन में होने वाले विकास का विनियमन किया जाएगा और सारणी में यथासूचीबद्ध पैराग्राफ 4 में प्रतिषिद्ध एवं विनियमित क्रियाकलापों का पालन किया जाएगा। इसमें स्थानीय जनता की आजीविका की सुरक्षा के लिए पारिस्थितिकी-अनुकूल विकास का भी सुनिश्चय एवं संवर्धन किया जाएगा।

(8) आंचलिक महायोजना, क्षेत्रीय विकास योजना की सह-कालिक होगी।

(9) अनुमोदित आंचलिक महायोजना, निगरानी समिति के लिए एक संदर्भ दस्तावेज होगी ताकि वह इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुसार निगरानी के अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सके।

3. राज्य सरकार द्वारा किए जाने वाले उपाय.- राज्य सरकार इस अधिसूचना के उपबंधों को प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय करेगी, अर्थात्:-

(1) **भू-उपयोग.-** (क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में वनों, बागवानी क्षेत्रों, कृषि क्षेत्रों, मनोरंजन के लिए चिन्हित उद्यानों और खुले स्थानों का वृहद वाणिज्यिक या आवासीय परिसरों या औद्योगिक क्रियाकलापों के लिए प्रयोग या संपरिवर्तन अनुज्ञात नहीं किया जाएगा:

परंतु पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर भाग (क), में विनिर्दिष्ट प्रयोजन से भिन्न प्रयोजन के लिए कृषि और अन्य भूमि का संपरिवर्तन, मानीटरी समिति की सिफारिश पर और सक्षम प्राधिकारी के पूर्व अनुमोदन से क्षेत्रीय नगर योजना अधिनियम तथा यथा लागू केन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अन्य नियमों एवं विनियमों के अधीन तथा इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुसार स्थानीय निवासियों की निम्नलिखित आवासीय जरूरतों को पूरा करने के लिए अनुज्ञात किया जाएगा जैसे:-

- (i) विद्यमान सड़कों को चौड़ा करना, उन्हें सुदृढ़ करना और नई सड़कों का संनिर्माण करना;
- (ii) बुनियादी ढांचों और नागरिक सुविधाओं का संनिर्माण और नवीकरण;
- (iii) प्रदूषण उत्पन्न न करने वाले लघु उद्योग;
- (iv) कुटीर उद्योग एवं ग्राम उद्योग; पारिस्थितिकी पर्यटन में सहायक सुविधा भण्डार, और स्थानीय सुविधाएं तथा ग्रह वास; और
- (v) पैराग्राफ-4 में उल्लिखित बढ़ावा दिए गए क्रियाकलाप:

परंतु यह भी कि क्षेत्रीय शहरी नियोजन अधिनियम के अधीन सक्षम प्राधिकारी के पूर्व अनुमोदन के बिना तथा राज्य सरकार के अन्य नियमों एवं विनियमों एवं संविधान के अनुच्छेद 244 के उपबंधों तथा तत्समय प्रवृत्त विधि, जिसके अंतर्गत अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 (2007 का 2) भी आता है, का अनुपालन किए बिना वाणिज्यिक या औद्योगिक विकास क्रियाकलापों के लिए जनजातीय भूमि का प्रयोग अनुज्ञात नहीं होगा:

परंतु यह भी कि पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाली भूमि के अभिलेखों में हुई किसी त्रुटि को, मानीटरी समिति के विचार प्राप्त करने के पश्चात्, राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक मामले में एक बार सुधारा जाएगा और उक्त त्रुटि को सुधारने की सूचना केंद्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को दी जाएगी:

परंतु यह भी कि उपर्युक्त त्रुटि को सुधारने में, इस उप-पैरा में यथा उपबंधित के सिवाय, किसी भी दशा में भू-उपयोग का परिवर्तन शामिल नहीं होगा:

(ख) अनुप्रयुक्त या अनुत्पादक कृषि क्षेत्रों में पुनः वनीकरण तथा पर्यावासों की बहाली के प्रयास किए जाएंगे।

(2) **प्राकृतिक जल स्रोत.**— आंचलिक महायोजना में सभी प्राकृतिक जलमार्गों के आवाह क्षेत्रों की पहचान की जाएगी और आंचलिक महायोजना में उनके संरक्षण और बहाली की योजना सम्मिलित की जाएगी और राज्य सरकार द्वारा जल आवाह प्रबंधन योजना इस रीति से बनाई जाएगी कि उसमें आवाह क्षेत्रों में विकास क्रियाकलापों को प्रतिषिद्ध और निर्बंधित किया गया हो।

(3) **पर्यटन एवं पारिस्थितिकी पर्यटन.**— (क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में सभी नए पारिस्थितिकी पर्यटन क्रियाकलाप या विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों का विस्तार पारिस्थितिकी संवेदी जोन सम्बंधी पर्यटन महायोजना के अनुसार अनुज्ञात होगा।

(ख) पारिस्थितिकी पर्यटन महायोजना राज्य सरकार के पर्यावरण और वन विभाग के परामर्श से राज्य के पर्यटन विभाग द्वारा बनायी जाएगी।

(ग) पर्यटन महायोजना आंचलिक महायोजना का घटक होगी।

(घ) पर्यटन महायोजना पारिस्थितिकी संवेदी जोन की वहन क्षमता के आधार पर तैयार की जायेगी।

(ङ) पारिस्थितिकी पर्यटन संबंधी क्रियाकलाप निम्नानुसार विनियमित किए जाएंगे, अर्थात्:-

(i) संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें जो भी अधिक निकट हो, किसी होटल या रिजॉर्ट का नया सन्निर्माण अनुज्ञात नहीं किया जाएगा:

परंतु यह, पारिस्थितिकी पर्यटन सुविधाओं के लिए संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर की दूरी से परे पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक पूर्व परिभाषित और अभीहित क्षेत्रों में पर्यटन महायोजना के अनुसार, नए होटलों और रिजॉर्ट की स्थापना अनुज्ञात होगी;

(ii) पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अन्दर सभी नए पर्यटन क्रिया-कलापों या विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों का विस्तार, केन्द्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा जारी दिशानिर्देशों तथा पारिस्थितिकी पर्यटन, पारिस्थितिकी-शिक्षा और पारिस्थितिकी-विकास पर बल देने वाले राष्ट्रीय व्याघ्र संरक्षण प्राधिकरण द्वारा जारी पारिस्थितिकी पर्यटन संबंधी दिशानिर्देशों (समय-समय पर यथा संशोधित) के अनुसार होगा;

(iii) आंचलिक महायोजना का अनुमोदन होने तक, पर्यटन के विकास और विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों के विस्तार को वास्तविक स्थल-विशिष्ट संवीक्षा तथा मानीटरी समिति की सिफारिश के आधार पर संबंधित विनियामक प्राधिकरणों द्वारा अनुज्ञात किया जाएगा और पारिस्थितिकी संवेदी जोन में किसी नए होटल, रिजॉर्ट या वाणिज्यिक प्रतिष्ठान का संनिर्माण अनुज्ञात नहीं होगा।

(4) **प्राकृतिक विरासत.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले बहुमूल्य प्राकृतिक विरासत के सभी स्थलों जैसे कि जीन पूल रिजर्व क्षेत्र, शैल संरचना, जल प्रपात, झरने, दर्रे, उपवन, गुफाएं, स्थल, वनपथ, रोहण मार्ग, उत्प्रपात आदि की पहचान की जाएगी और उनकी सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए आंचलिक महायोजना के भाग के रूप में एक विरासत संरक्षण योजना बनायी जाएगी।

(5) **मानव निर्मित विरासत स्थल.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन में भवनों, संरचनाओं, कलाकृति-क्षेत्रों तथा ऐतिहासिक, स्थापत्य संबंधी, सौंदर्यात्मक और सांस्कृतिक महत्व के क्षेत्रों की पहचान की जाएगी और उनके संरक्षण के लिए आंचलिक महायोजना के भाग के रूप में एक विरासत संरक्षण योजना बनायी जाएगी।

(6) **ध्वनि प्रदूषण.**— पर्यावरण अधिनियम के अधीन ध्वनि प्रदूषण (विनियमन और नियंत्रण) नियम, 2000 में नियत उपबंधों के अनुसार पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ध्वनि प्रदूषण के निवारण और नियंत्रण के लिए विनियमों को क्रियान्वित किया जाएगा।

(7) **वायु प्रदूषण.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन में, वायु प्रदूषण के निवारण और नियंत्रण का वायु (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम, 1981 (1981 का 14) और उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुसार अनुपालन किया जाएगा।

(8) **बहिस्त्राव का निस्सारण.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन में उपचारित बहिस्त्राव का निस्सारण, पर्यावरण अधिनियम और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन आने वाले पर्यावरणीय प्रदूषण के निस्सारण के लिए साधारण मानकों या राज्य सरकार द्वारा नियत मानकों, जो भी अधिक कठोर हो, के उपबंधों के अनुसार होगा।

(9) **ठोस अपशिष्ट.**— ठोस अपशिष्ट का निपटान एवं प्रबंधन निम्नानुसार किया जाएगा:-

(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ठोस अपशिष्ट का निपटान और प्रबंधन भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं. का.आ. 1357(अ), दिनांक 8 अप्रैल, 2016 के तहत प्रकाशित ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा। अकार्बनिक पदार्थों का निपटान पारिस्थितिकी संवेदी जोन से बाहर चिन्हित किए गए स्थानों पर पर्यावरण-अनुकूल रीति से किया जाएगा;

(ख) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में मान्य प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करते हुए विद्यमान नियमों और विनियमों के अनुरूप ठोस अपशिष्ट का सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन (ईएसएम) अनुज्ञात किया जायेगा।

(10) **जैव चिकित्सा अपशिष्ट.**— जैव चिकित्सा अपशिष्ट का प्रबंधन निम्नानुसार किया जाएगा:-

(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में जैव चिकित्सा अपशिष्ट का निपटान भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं.सा.का.नि 343 (अ), तारीख 28 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित जैव चिकित्सा अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा;

(ख) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में मान्य प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करते हुए विद्यमान नियमों और विनियमों के अनुरूप ठोस अपशिष्ट का सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन अनुज्ञात किया जायेगा।

(11) **प्लास्टिक अपशिष्ट का प्रबंधन.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन में प्लास्टिक अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं.सा.का.नि 340(अ), तारीख 18 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(12) **निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट का प्रबंधन.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन में निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं.सा.का.नि 317(अ), तारीख 29 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित संनिर्माण और विध्वंस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(13) **ई-अपशिष्ट-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ई-अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित तथा समय-समय पर यथा संशोधित ई-अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(14) **सड़क-यातायात-** सड़क-यातायात को पर्यावास-अनुकूल तरीके से विनियमित किया जाएगा और इस संबंध में आंचलिक महायोजना में विशेष उपबंध शामिल किए जाएंगे। आंचलिक महायोजना के तैयार होने और राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी से अनुमोदित होने तक, मानीटरी समिति प्रासंगिक अधिनियमों और उनके तहत बनाए गए नियमों एवं विनियमों के अनुसार सड़क-यातायात के अनुपालन की मानीटरी करेगी।

(15) **वाहन जनित प्रदूषण-** वाहन जनित प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण लागू विधियों के अनुसार किया जाएगा। स्वच्छतर ईंधन के उपयोग के लिए प्रयास किए जाएंगे।

(16) **औद्योगिक इकाइयां-** (i) सरकारी राजपत्र में इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख को या उसके बाद पारिस्थितिकी संवेदी जोन में किसी नए प्रदूषणकारी उद्योग की स्थापना अनुज्ञात नहीं होगी।

(ii) जब तक इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट न हो, पारिस्थितिकी संवेदी जोन में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा फरवरी, 2016 में जारी दिशानिर्देशों में किए गए उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार केवल गैर-प्रदूषणकारी उद्योगों की स्थापना अनुज्ञात होगी। इसके अतिरिक्त, गैर-प्रदूषणकारी कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया जाएगा।

(17) **पहाड़ी ढलानों का संरक्षण-** पहाड़ी ढलानों का संरक्षण निम्नानुसार किया जाएगा:-

(क) आंचलिक महायोजना में पहाड़ी ढलानों के उन क्षेत्रों को दर्शाया जाएगा जिनमें किसी भी संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं होगी;

(ख) जिन ढलानों या विद्यमान खड़ी पहाड़ी ढलानों में अत्यधिक भू-क्षरण होता है उनमें किसी भी संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं होगी।

4. पारिस्थितिकी संवेदी जोन में प्रतिषिद्ध या विनियमित किए जाने वाले क्रियाकलापों की सूची- पारिस्थितिकी संवेदी जोन में सभी क्रियाकलाप, पर्यावरण अधिनियम के उपबंधों और तटीय विनियमन जोन अधिसूचना, 2011 एवं पर्यावरणीय प्रभाव आकलन अधिसूचना, 2006 सहित उसके अधीन बने नियमों और वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 (1980 का 69), भारतीय वन अधिनियम, 1927 (1927 का 16), वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 (1972 का 53) सहित अन्य लागू नियमों तथा उनमें किए गए संशोधनों के अनुसार शासित होंगे और नीचे दी गई सारणी में विनिर्दिष्ट रीति से विनियमित होंगे, अर्थात्:-

सारणी

क्र. सं.	क्रियाकलाप	टिप्पणी
(1)	(2)	(3)
क. प्रतिषिद्ध क्रियाकलाप		
1.	वाणिज्यिक खनन, पत्थर उत्खनन और अपघर्षण इकाइयां।	<p>(क) सभी प्रकार के नए और विद्यमान खनन (लघु और वृहत खनिज), पत्थर की खानें और उनको तोड़ने की इकाइयां वास्तविक स्थानीय निवासियों की घरेलू आवश्यकताओं जिसमें निजी उपयोग के लिए मकानों के संनिर्माण या मरम्मत के लिए धरती को खोदना और मकान बनाने के लिए देशी टाइल्स या ईंटों का निर्माण करना भी सम्मिलित है, के सिवाय नहीं होंगी ;</p> <p>(ख) खनन संक्रियाएं, माननीय उच्चतम न्यायालय के 1995 की रिट याचिका (सिविल) सं. 202 में टी.एन. गौडाबर्मन थिरुमूलपाद बनाम भारत संघ के मामले में आदेश तारीख 4 अगस्त, 2006 और 2012 की रिट याचिका (सी) सं. 435 में गोवा फाउंडेशन बनाम भारत संघ के मामले में तारीख 21 अप्रैल, 2014 के आदेश के अनुसरण में प्रचालित होंगी।</p>

2.	प्रदूषण (जल, वायु, मृदा, ध्वनि, आदि) उत्पन्न करने वाले उद्योगों की स्थापना।	पारिस्थितिकी संवेदी जोन में कोई नया उद्योग लगाने और वर्तमान प्रदूषणकारी उद्योगों का विस्तार करने की अनुमति नहीं होगी: जब तक कि इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट न हो, पारिस्थितिकी संवेदी जोन में फरवरी, 2016, में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी दिशानिर्देशों में किए गए उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार केवल गैर- प्रदूषणकारी उद्योगों की स्थापना होगी। इसके अतिरिक्त, गैर-प्रदूषणकारी कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जाएगा।
3.	बड़ी जल विद्युत परियोजनाओं की स्थापना।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।
4.	किसी परिसंकटमय पदार्थ का प्रयोग या उत्पादन या प्रसंस्करण।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।
5.	प्राकृतिक जल निकायों या भूमि क्षेत्र में अनुपचारित बहिस्त्रावों का निस्सारण।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।
6.	नई आरा मिलों की स्थापना।	पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर नई और विद्यमान आरा मिलों का विस्तार अनुज्ञात नहीं होगा।
7.	जलावन लकड़ी का वाणिज्यिक उपयोग।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।
8.	पोलिथीन बैगों का प्रयोग।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।
9.	ईंट भट्टों की स्थापना करना।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।
ख. विनियमित क्रियाकलाप		
10.	होटलों और रिसोर्टों की वाणिज्यिक स्थापना।	पारिस्थितिकी पर्यटन क्रियाकलापों हेतु लघु अस्थायी संरचनाओं के निर्माण के सिवाय, संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें जो भी अधिक निकट हो, नए वाणिज्यिक होटलों और रिसोर्टों की स्थापना अनुज्ञात नहीं होगी: परंतु, संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर बाहर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, पर्यटन महायोजना और लागू दिशानिर्देशों के अनुसार इनमें जो भी अधिक निकट हो, सभी नए पर्यटन क्रियाकलाप करने या विद्यमान क्रियाकलापों का विस्तार करने की अनुज्ञा होगी।
11.	संनिर्माण क्रियाकलाप।	(क) संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन के विस्तार तक जो भी निकट हो, किसी भी प्रकार का वाणिज्यिक संनिर्माण अनुज्ञात नहीं किया जाएगा: परंतु स्थानीय लोगों को पैराग्राफ 3 के उप पैराग्राफ (1) में सूचीबद्ध क्रियाकलापों सहित उनके उपयोग के लिए उनकी भूमि में स्थानीय निवासियों की आवासीय आवश्यकताओं को पूरा करने लिए संनिर्माण करने की अनुमति भवन उपविधियों के अनुसार दी जाएगी। परन्तु ऐसे लघु उद्योगों जो प्रदूषण उत्पन्न नहीं करते हैं, से संबंधित संनिर्माण क्रियाकलाप विनियमित किए जाएंगे और लागू नियमों और विनियमों, यदि कोई हों, के अनुसार सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति

		<p>से ही न्यूनतम पर रखे जाएंगे।</p> <p>(ख) एक किलोमीटर से आगे आंचलिक महायोजना की अनुसार विनियमित होंगे।</p>
12.	गैर प्रदूषणकारी लघु उद्योग।	फरवरी, 2016 में केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार गैर-प्रदूषणकारी उद्योग तथा अपरिसंकटमय लघु और सेवा उद्योग, कृषि, पुष्प कृषि, बागवानी या कृषि आधारित उद्योग, जो पारिस्थितिकी संवेदी जोन से देशी सामग्रियों से उत्पाद बनाते हैं, सक्षम प्राधिकारी द्वारा अनुज्ञात होंगे।
13.	वृक्षों की कटाई।	<p>(क) राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति के बिना वन भूमि या सरकारी या राजस्व या निजी भूमि पर वृक्षों की कटाई नहीं होगी।</p> <p>(ख) वृक्षों की कटाई केंद्रीय या संबंधित राज्य के अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुसार विनियमित होगी।</p>
14.	वन उत्पादों और गैर काष्ठ वन उत्पादों का संग्रहण।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
15.	विद्युत और संचार टॉवर लगाने, तार-बिछाने तथा अन्य बुनियादी ढांचे की व्यवस्था।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा। (भूमिगत केबल बिछाने को बढ़ावा दिया जाएगा)।
16.	नागरिक सुविधाओं सहित बुनियादी ढांचा।	लागू विधियों नियम और विनियमन और उपलब्ध दिशानिर्देशों के अनुसार न्यूनीकरण उपाय किए जाएंगे।
17.	विद्यमान सड़कों को चौड़ा करना, उन्हें सुदृढ़ बनाना और नई सड़कों का निर्माण।	लागू विधियों नियम और विनियमन और उपलब्ध दिशानिर्देशों के अनुसार न्यूनीकरण उपाय किए जाएंगे।
18.	पर्यटन से संबंधित अन्य क्रियाकलाप जैसे कि पारिस्थितिकी संवेदी जोन क्षेत्र के ऊपर से गर्म वायु के गुब्बारे, हेलीकाप्टर, ड्रोन, माइक्रोलाइट्स उड़ाना आदि।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
19.	पहाड़ी ढालों और नदी तटों का संरक्षण।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
20.	रात्रि में वाहन यातायात का संचलन।	लागू विधियों के अधीन वाणिज्यिक प्रयोजन के लिए विनियमित होगा।
21.	स्थानीय जनता द्वारा अपनायी जा रही वर्तमान कृषि और बागवानी पद्धतियों के साथ डेयरियां, दुग्ध उत्पादन, जल कृषि और मत्स्य पालन।	स्थानीय जनता के प्रयोग के लिए लागू विधियों के अधीन अनुज्ञात होंगे।
22.	फर्मों, कारपोरेट, कंपनियों द्वारा बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक पशुधन संपदा और कुक्कुट फार्मों की स्थापना।	स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने के सिवाय लागू विधियों के अधीन विनियमित (अन्यथा प्रदान किए गए) होंगे।

23.	प्राकृतिक जल निकायों या भू क्षेत्र में उपचारित अपशिष्ट जल/बहिर्वाह का निस्सारण ।	जल निकायों में उपचारित अपशिष्ट जल/बहिर्वाह के निस्सारण से बचा जाएगा। उपचारित अपशिष्ट जल के पुनर्चक्रण और पुनःउपयोग के प्रयास किए जाएंगे अन्यथा उपचारित अपशिष्ट जल/बहिर्वाह का निस्सारण लागू विधियों के अनुसार विनियमित किया जाएगा।
24.	सतही और भूजल का वाणिज्यिक प्रयोग हेतु निष्कर्षण ।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा ।
25.	ठोस अपशिष्ट का प्रबंधन।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा ।
26.	विदेशी प्रजातियों को लाना ।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा ।
27.	पारिस्थितिकी पर्यटन।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा ।
28.	वाणिज्यिक संकेत बोर्ड और होर्डिंग का प्रयोग ।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा ।
ग.संबर्धित क्रियाकलाप		
29.	वर्षा जल संचय ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा ।
30.	जैविक खेती।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा ।
31.	सभी गतिविधियों के लिए हरित प्रौद्योगिकी का अंगीकरण ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा ।
32.	ग्रामीण कारीगरी सहित कुटीर उद्योग।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा ।
33.	नवीकरणीय ऊर्जा और ईंधन का प्रयोग ।	बायोगैस, सौर प्रकाश इत्यादि को सक्रिय बढ़ावा दिया जाएगा।
34.	कृषि वानिकी ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा ।
35.	बागान लगाना और जड़ी बूटियों का रोपण ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा ।
36.	पारिस्थितिकी अनुकूल यातायात का प्रयोग ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा ।
37.	कौशल विकास ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा ।
38.	अवक्रमित भूमि/वनों/ पर्यावासों की बहाली ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा ।
39.	पर्यावरण के प्रति जागरूकता।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा ।

5. पारिस्थितिकी-संवेदी जोन अधिसूचना की निगरानी के लिए निगरानी समिति:- इस अधिसूचना के प्रावधानों की प्रभावी निगरानी के लिए प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केंद्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986, की धारा 3 की उपधारा (3) द्वारा, इस अधिसूचना के अंतर्गत एक निगरानी समिति का गठन करेगी जो निम्नलिखित से मिलकर बनेगी, अर्थात :-

क्र.स.	निगरानी समिति का गठन	पद
(i)	कलेक्टर, नैनीताल	पदेन, अध्यक्ष;
(ii)	चंपावत के कलेक्टर के प्रतिनिधि	सदस्य;

(iii)	पर्यावरण विभाग, उत्तराखंड सरकार के प्रतिनिधि	सदस्य;
(iv)	उत्तराखंड सरकार के शहरी विकास विभाग के प्रतिनिधि	सदस्य;
(v)	क्षेत्रीय अधिकारी, उत्तराखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड	सदस्य;
(vi)	राज्य सरकार द्वारा नामित किए जाने वाले वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में काम करने वाले गैर-सरकारी संगठन का प्रतिनिधि	सदस्य;
(vii)	प्रत्येक मामले में एक वर्ष की अवधि के लिए राज्य सरकार द्वारा पारिस्थितिकी और पर्यावरण के क्षेत्र में एक विशेषज्ञ को नामित किया जाना है	सदस्य;
(viii)	संभागीय वन अधिकारी, हल्द्वानी वन प्रभाग	सदस्य-सचिव।

6.विचारार्थ विषय:- (1) निगरानी समिति इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुपालन की निगरानी करेगी।

(2) निगरानी समिति का कार्यकाल तीन वर्ष तक या राज्य सरकार द्वारा नई समिति का पुनर्गठन किए जाने तक होगा और इसके बाद निगरानी समिति राज्य सरकार द्वारा गठित की जाएगी।

(3) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में भारत सरकार के तत्कालीन पर्यावरण और वन मंत्रालय की अधिसूचना सं. का.आ. 1533(अ), तारीख 14 सितंबर, 2006, की अनुसूची में सम्मिलित क्रियाकलापों और इस अधिसूचना के पैरा 4 के अधीन सारणी में यथा विनिर्दिष्ट प्रतिषिद्ध गतिविधियों के सिवाय आने वाले ऐसे क्रियाकलापों की दशा में वास्तविक विनिर्दिष्ट स्थलीय दशाओं के आधार पर निगरानी समिति द्वारा संवीक्षा की जाएगी और उक्त अधिसूचना के उपबंधों के अधीन पूर्व पर्यावरण अनापत्ति के लिए केन्द्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को निर्दिष्ट की जाएगी।

(4) भारत सरकार के तत्कालीन पर्यावरण और वन मंत्रालय की अधिसूचना संख्या का.आ. 1533(अ), तारीख 14 सितंबर, 2006 की अधिसूचना के अनुसूची के अधीन ऐसे क्रियाकलापों, जिन्हें सम्मिलित नहीं किया गया है, परंतु पारिस्थितिकी संवेदी जोन में आते हैं, इस अधिसूचना के पैरा 4 के अधीन सारणी में यथा विनिर्दिष्ट प्रतिषिद्ध क्रियाकलापों के सिवाय, ऐसे क्रियाकलापों की वास्तविक विनिर्दिष्ट स्थलीय दशाओं के आधार पर निगरानी समिति द्वारा संवीक्षा की जाएगी और उसे संबद्ध विनियामक प्राधिकरणों को निर्दिष्ट किया जाएगा।

(5) निगरानी समिति का सदस्य-सचिव या संबद्ध उपायुक्त या संबंधित उपायुक्त ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध, जो इस अधिसूचना के किसी उपबंध का उल्लंघन करता है, पर्यावरण अधिनियम, की धारा 19 के अधीन परिवाद दायर करने के लिए सक्षम होगा।

(6) निगरानी समिति संबंधित विभागों के प्रतिनिधियों या विशेषज्ञों, औद्योगिक संघों के प्रतिनिधियों या संबंधित पक्षों को, प्रत्येक मामले में आवश्यकता के अनुसार, अपने विचार-विमर्श में सहायता के लिए आमंत्रित कर सकेगी।

(7) निगरानी समिति प्रत्येक वर्ष 31 मार्च की स्थिति के अनुसार अपनी वार्षिक कार्रवाई रिपोर्ट राज्य के मुख्य वन्यजीव वार्डन को, **उपाबंध V** में दिए गए प्रपत्र के अनुसार, उस वर्ष की 30 जून तक प्रस्तुत करेगी।

(8) केन्द्रीय सरकार का पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय निगरानी समिति को उसके कृत्यों के प्रभावी निर्वहन के लिए ऐसे निदेश दे सकेगा जो वह उचित समझे।

7. इस अधिसूचना के उपबंधों को प्रभावी बनाने के लिए केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार, अतिरिक्त उपाय, यदि कोई हों, विनिर्दिष्ट कर सकेंगी।

8. इस अधिसूचना के उपबंध भारत के माननीय उच्चतम न्यायालय या माननीय उच्च न्यायालय या माननीय राष्ट्रीय हरित अधिकरण द्वारा पारित किए गए या पारित किए जाने वाले आदेश, यदि कोई हो, के अधीन होंगे।

[फा. सं. 25/113/2015-ईएसजेड-आरई]

डॉ. सतीश चन्द्र गढ़कोटी, वैज्ञानिक 'जी'

उपाबंध- I**उत्तराखंड राज्य में नंधौर वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा का विवरण**

पूर्व दिशा – सारदा उत्तर 22,23, मतीअबांझ 3,4, छीनी 53, पश्चिम बस्तीअ 1,2,3, पूर्व बस्तीअ 1,2,3,4, नागहन 8, बरमदेव ए2,ए1, ककराली बी, ए, डी, उत्तर गुलीअपानी 4बी, दक्षिण गुलीअपानी 1,2,3, पूर्व किलपुरा ए, बी, सी;

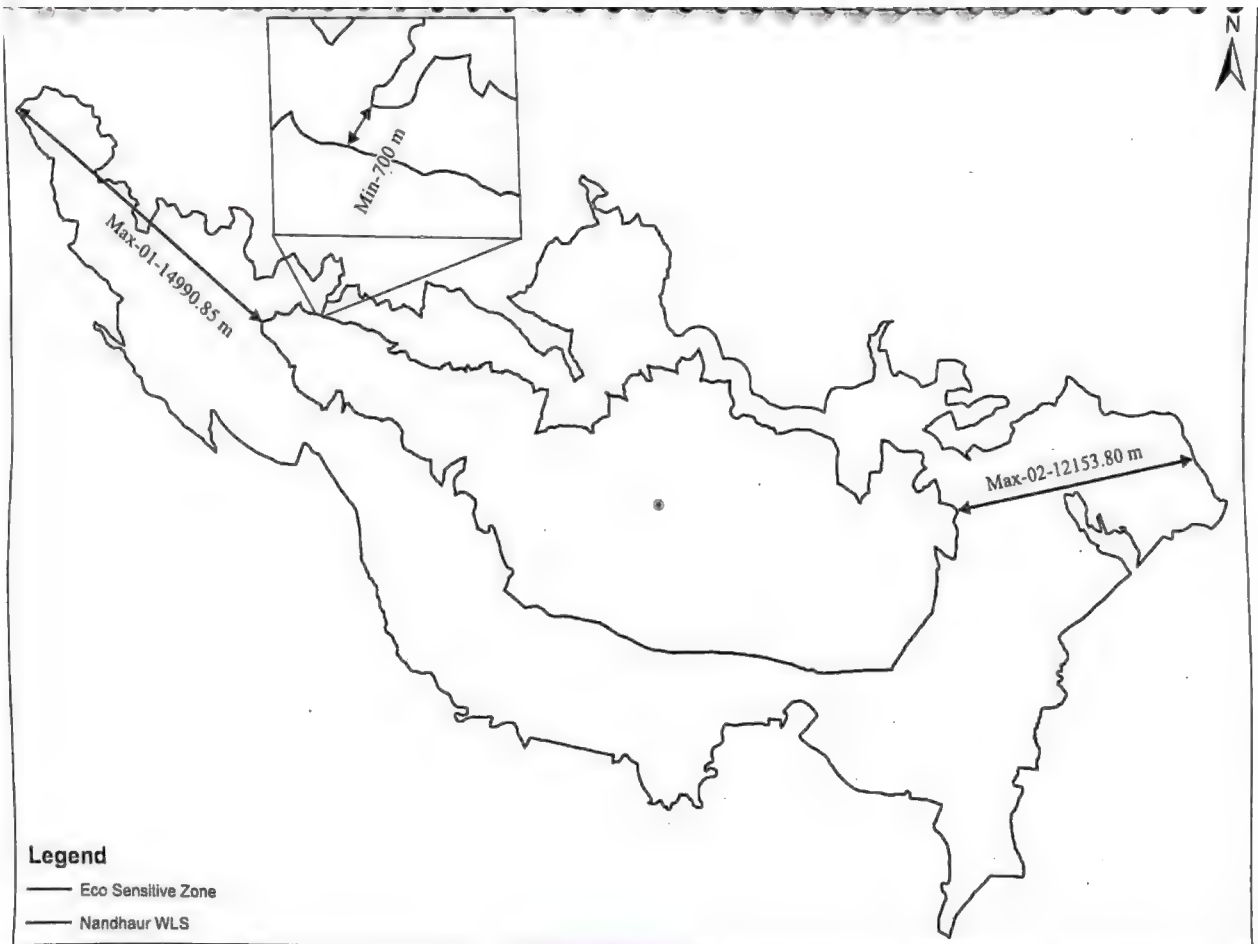
पश्चिम दिशा- केलेगा-6,1, नंधौर-1 सुमंथपला-2, लखनमांदि-5ए, 4सी, 4ए, 4बी, 3, 2ए, 1ए, 8बी, दोलपुखरा- 5, 8बी, 8सी, 8ए, 7ए, 7बी, 6बी, 6ए, कलुखेरा- 5,6,3 रतीघाट- 3ए, 1ए, 1बी, 2बी, 2ए, 3बी, 3ए,4, 5, 6ए, 6बी गरखेराक खंड सी.सं.-1, 2, 3, 4, 5ए, 5बी शिमलिया खंड सी.सं.-5बी, 4सी, 4ए, 3, 2, 1 पटरानी खंड सी.सं.- 4, पश्चिम लोबचुला 1ए, 2बी, 2ए, 3ए,4ए;

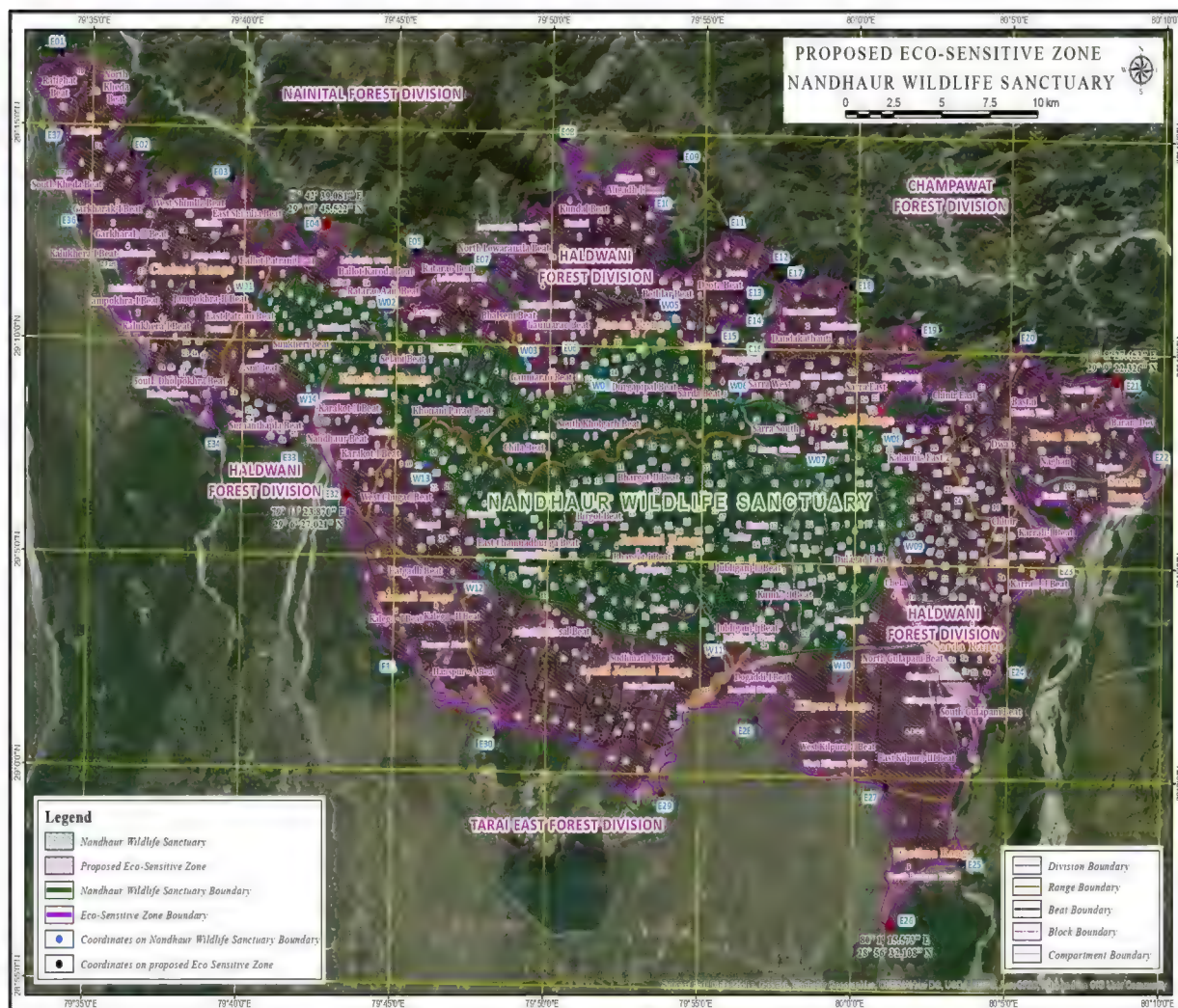
उत्तर दिशा– पूर्व लोबचुला 1,2,3, गयनीयारोअ 1,13, उत्तर खोलघर 1, उपराउला गयनीयारोअ 1,2, दक्षिण लोवेरानाला 1,4,5, उत्तर लोवेरानाला 4बी, 3बी, 2बी कुंदाल 1,4,5,8 अलीगर 1बी, 1ए, बेटलाड 5ए, 5बी (भाग), 2ए(भाग), 1ए(भाग), 1बी(भाग), दुरगापिल 11(भाग), शारदा उत्तर 4(भाग), 5(भाग), 6(भाग);

दक्षिण दिशा –उत्तर बंदासा खंड 5,8,7, पश्चिम किलपुरा ए, डोगरी खंड-1 एवं 2, सुदलीमाथ खंड I, 11बी, सुदलीमाथ खंड-II-2बी,2ए,1बी,1ए, बेडा आरक्षित -3 पूर्व जौलासाल- 16,15,14,13,12, पश्चिम जौलासाल - 6बी, हंसपुर खंड-सी , कालेगा-7

उपाबंध- IIक

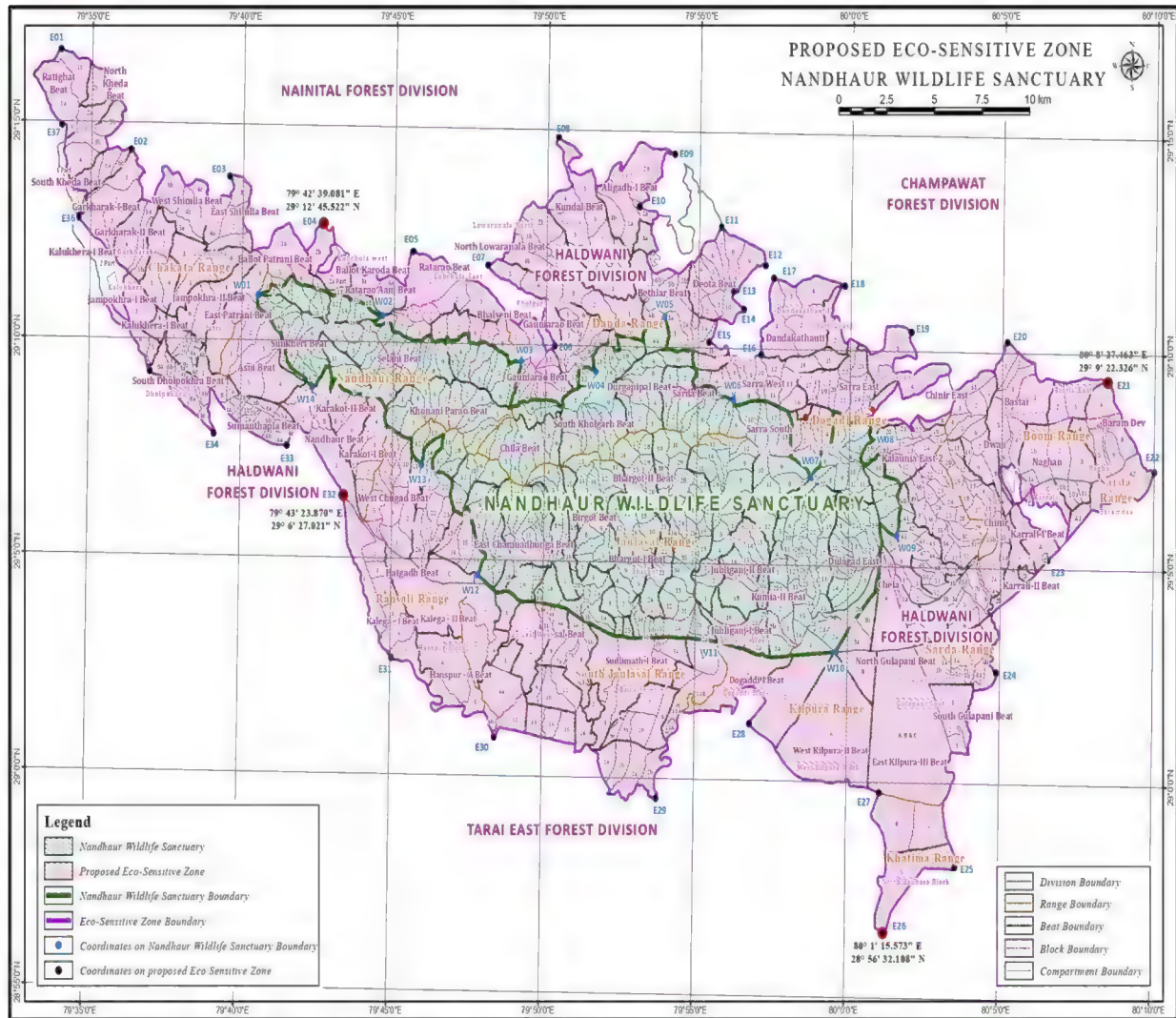
मुख्य अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ नंधौर वन्यजीव अभयारण्य और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन का मानचित्र





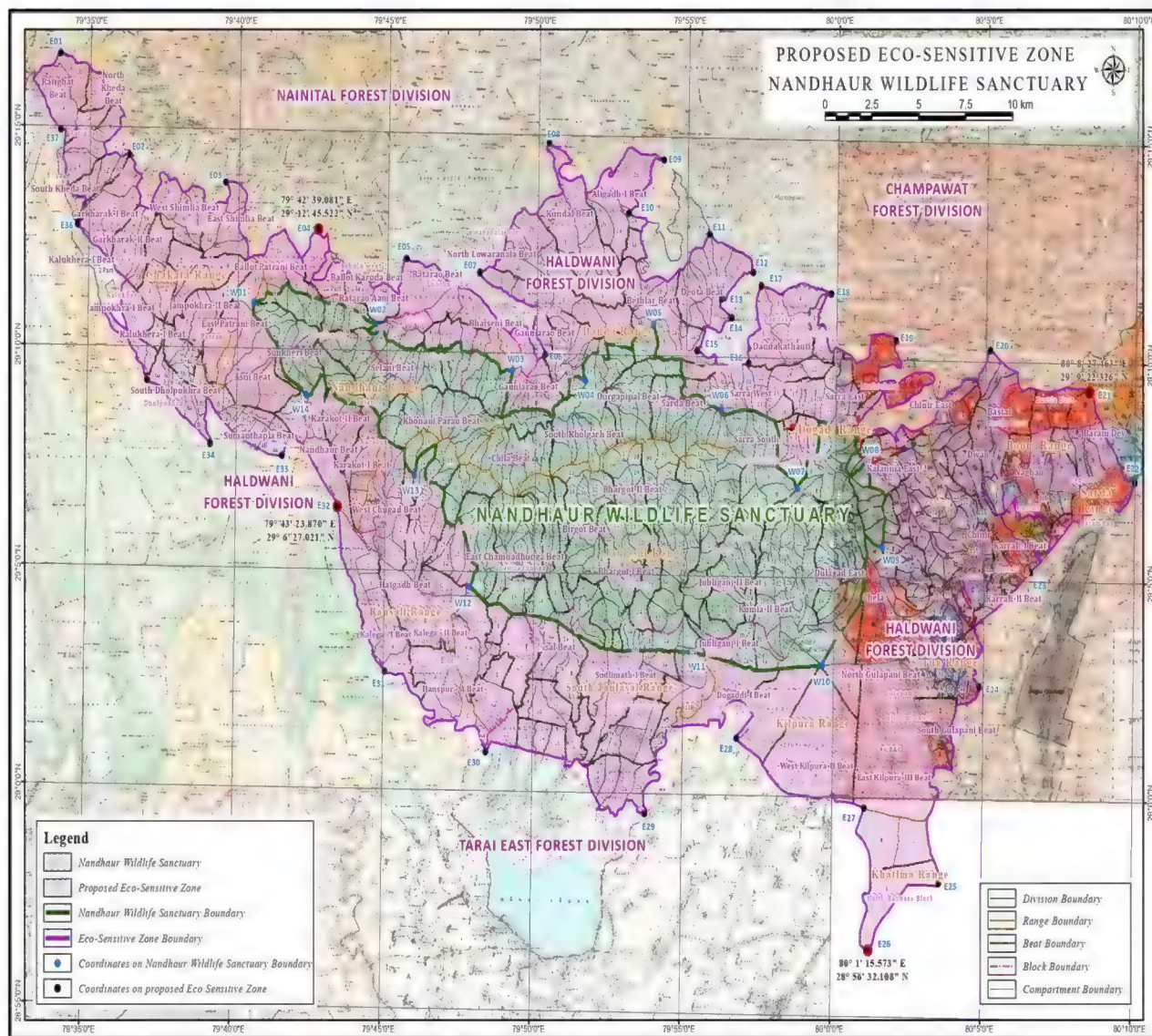
उपाबंध- IIग

भारतीय सर्वेक्षण (एस ओ आई) टोपोशीट पर मुख्य अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ नंदाौर वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन का मानचित्र



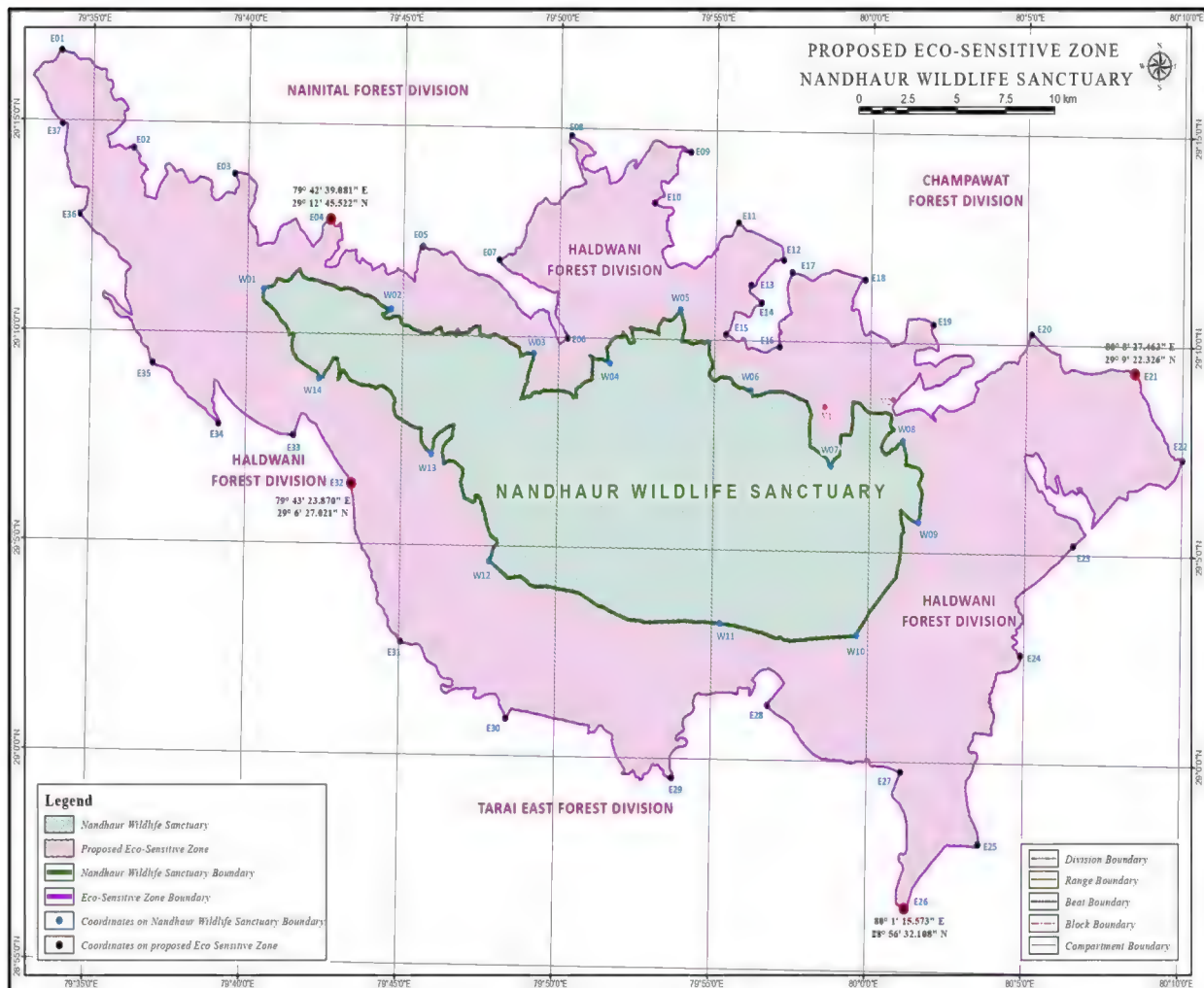
उपाबंध- IIघ

भारतीय सर्वेक्षण (एस ओ आई) टोपोशीट पर मुख्य अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ नन्धौर वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन का मानचित्र



उपाबंध-॥ड

मुख्य अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ नंधौर वन्यजीव अभयारण्य और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन का मानचित्र



उपाबंध-III

सारणी क : नंधौर वन्यजीव अभयारण्य के मुख्य अवस्थानों के भू-निर्देशांक

बिंदु	देशांतर	अक्षांश	विवरण
डब्ल्यू 01	79° 40' 31.695" पू	29° 11' 3.884" उ	नंधौर वन्यजीव अभयारण्य
डब्ल्यू 02	79° 44' 37.284" पू	29° 10' 38.038" उ	नंधौर वन्यजीव अभयारण्य
डब्ल्यू 03	79° 49' 12.193" पू	29° 9' 37.718" उ	नंधौर वन्यजीव अभयारण्य
डब्ल्यू 04	79° 51' 38.832" पू	29° 9' 25.676" उ	नंधौर वन्यजीव अभयारण्य
डब्ल्यू 05	79° 53' 53.049" पू	29° 10' 44.254" उ	नंधौर वन्यजीव अभयारण्य
डब्ल्यू 06	79° 56' 10.269" पू	29° 8' 49.470" उ	नंधौर वन्यजीव अभयारण्य
डब्ल्यू 07	79° 58' 45.739" पू	29° 7' 3.473" उ	नंधौर वन्यजीव अभयारण्य
डब्ल्यू 08	80° 1' 2.823" पू	29° 7' 40.210" उ	नंधौर वन्यजीव अभयारण्य
डब्ल्यू 09	80° 1' 34.977" पू	29° 5' 44.964" उ	नंधौर वन्यजीव अभयारण्य
डब्ल्यू 10	79° 59' 37.921" पू	29° 3' 1.139" उ	नंधौर वन्यजीव अभयारण्य
डब्ल्यू 11	79° 55' 15.137" पू	29° 3' 15.607" उ	नंधौर वन्यजीव अभयारण्य
डब्ल्यू 12	79° 47' 50.944" पू	29° 4' 39.597" उ	नंधौर वन्यजीव अभयारण्य
डब्ल्यू 13	79° 45' 57.253" पू	29° 7' 11.210" उ	नंधौर वन्यजीव अभयारण्य
डब्ल्यू 14	79° 42' 19.679" पू	29° 8' 57.363" उ	नंधौर वन्यजीव अभयारण्य

सारणी ख: पारिस्थितिकी संवेदी जोन के मुख्य अवस्थानों के भू-निर्देशांक

बिंदु	देशांतर	अक्षांश	विवरण
ई01	79° 33' 57.762" पू	29° 16' 39.994" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 02	79° 36' 19.052" पू	29° 14' 23.009" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 03	79° 39' 33.453" पू	29° 13' 48.082" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 04	79° 42' 39.081" पू	29° 12' 45.522" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 05	79° 45' 36.564" पू	29° 12' 8.292" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 06	79° 50' 17.169" पू	29° 10' 0.514" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 07	79° 48' 4.071" पू	29° 11' 51.318" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 08	79° 50' 20.665" पू	29° 14' 50.935" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 09	79° 52' 1.722" पू	29° 13' 58.015" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 10	79° 53' 13.318" पू	29° 11' 2.581" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 11	79° 54' 38.887" पू	29° 10' 30.784" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 12	79° 57' 43.191" पू	29° 9' 15.266" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 13	79° 59' 48.190" पू	29° 11' 30.730" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 14	80° 1' 59.701" पू	29° 10' 27.968" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 15	80° 5' 8.790" पू	29° 10' 16.371" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन

ई 16	80° 8' 27.463" पू	29° 9' 22.326" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 17	80° 10' 0.297" पू	29° 7' 18.207" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 18	80° 6' 32.886" पू	29° 5' 13.986" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 19	80° 4' 52.771" पू	29° 2' 35.607" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 20	80° 3' 35.373" पू	28° 58' 4.653" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 21	80° 1' 15.573" पू	28° 56' 32.108" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 22	80° 1' 4.867" पू	28° 59' 46.918" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 23	79° 56' 47.563" पू	29° 1' 19.672" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 24	79° 53' 46.660" पू	28° 59' 33.923" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 25	79° 48' 26.818" पू	29° 0' 54.202" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 26	79° 45' 2.150" पू	29° 2' 42.193" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 27	79° 43' 23.870" पू	29° 6' 27.021" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 28	79° 41' 31.539" पू	29° 7' 34.821" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 29	79° 39' 7.687" पू	29° 7' 49.656" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 30	79° 36' 59.523" पू	29° 9' 14.706" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 31	79° 34' 35.786" पू	29° 12' 46.539" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन
ई 32	79° 34' 0.471" पू	29° 14' 55.206" उ	पारिस्थितिकी संवेदी जोन

उपाबंध-IVक

भू-निर्देशांकों के साथ नंधौर वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले ग्रामों की सूची

नाम	ग्राम	देशांतर	अक्षांश
कथोल	बी1	79° 58' 32.561" पू	29° 8' 27.937" उ
बकरीयालकीपाटली	बी2	80° 0' 44.337" पू	29° 8' 39.672" उ

उपाबंध-IVख

राजस्व क्षेत्र और सीमा विवरण के साथ नंधौर वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले ग्रामों का विवरण

क्र.सं.	ग्राम का नाम	तहसील	ग्राम के अन्तर्गत पंचायती वन का क्षेत्र (हेक्टेयर)	राजस्व ग्राम का क्षेत्र (हेक्टेयर)	सीमा
1	कथोल	पूर्णागिरी	-	50.040	उत्तर – सारदा उत्तर 16, दक्षिण – कथोल 1 एवं 2, पूर्व – कथोल 3, पश्चिम-दक्षिण सारदा 13

2	बकरीयाल की पत्ती (निकटतम ग्राम)		15.741	145.144	उत्तर-बकरीयाल सिविल वन, दक्षिण – मतीअबंझ 2, पूर्व – मतीअबंझ 3, पश्चिम- बडम
		कुल	15.741	195.184	

उपाबंध-V**की गई कार्रवाई सम्बन्धी रिपोर्ट का प्रपत्र:**

1. बैठकों की संख्या और तारीख ।
2. बैठकों का कार्यवृत्त : (कृपया मुख्य उल्लेखनीय बिंदुओं का वर्णन करें । बैठक के कार्यवृत्त को एक पृथक उपाबंध में प्रस्तुत करें) ।
3. पर्यटन महायोजना सहित आंचलिक महायोजना की तैयारी की स्थिति ।
4. भू-अभिलेखों की स्पष्ट त्रुटियों के सुधार के लिए निबटाए गए मामलों का सार(पारिस्थितिकी-संवेदी जोन वार) । विवरण उपाबंध के रूप में संलग्न करें।
5. पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन अधिसूचना, 2006 के अधीन आने वाली गतिविधियों से संबंधित संवीक्षा किए गए मामलों का सार।(विवरण एक पृथक उपाबंध के रूप में संलग्न करें)।
6. पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन अधिसूचना, 2006 के अधीन न आने वाली गतिविधियों से संबंधित संवीक्षा किए गए मामलों का सार । (विवरण एक पृथक उपाबंध के रूप में संलग्न करें)।
7. पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 19 के अधीन दर्ज की गई शिकायतों का सार ।
8. कोई अन्य महत्वपूर्ण मामला ।

MINISTRY OF ENVIRONMENT, FOREST AND CLIMATE CHANGE**NOTIFICATION**

New Delhi, the 22nd May, 2020

S.O. 1616(E).— In supersession of Ministry's draft notification S.O. 3882 (E), dated 13th December, 2017, the following draft of the notification, which the Central Government proposes to issue in exercise of the powers conferred by sub-section (1), read with clause (v) and clause (xiv) of sub-section (2) and sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986 (29 of 1986) is hereby published, as required under sub-rule (3) of rule 5 of the Environment (Protection) Rules, 1986, for the information of the public likely to be affected thereby; and notice is hereby given that the said draft notification shall be taken into consideration on or after the expiry of a period of sixty days from the date on which copies of the Gazette containing this notification are made available to the public;

Any person interested in making any objections or suggestions on the proposals contained in the draft notification may forward the same in writing, for consideration of the Central Government within the period so specified to the Secretary, Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Indira Paryavaran Bhawan, Jorbagh Road, Aliganj, New Delhi-110 003, or send it to the e-mail address of the Ministry at esz-mef@nic.in

Draft Notification

WHEREAS, the Nandhaur Wildlife Sanctuary is located in two districts namely, Nainital and Champawat districts of Uttarakhand, which derives its name from Nandhaur valley and Nandhaur river which flows inside the valley and the Nandhaur Wildlife Sanctuary lies between North latitudes 28°56'29.35'' to 29°16'39.79'' and between East longitudes 79°33'3.82'' to 80°10'0.03'' and spread over an area of 269.95 square kilometers;

AND WHEREAS, this large landscape is flanked by river Yamuna towards the west to river Bhagmati in Nepal towards east;

AND WHEREAS, this landscape is a representative of Tarai-Duar Savana Eco-region, flanking the Himalayas in the southern slopes and the whole area of the landscape is recognized as an important center of biodiversity, both at national and global level;

AND WHEREAS, major flora available in the Sanctuary are *Cassia fistula* (amaltash), *Ailanthus excelsa* (aru), *Mangifera indica* (aam), *Spondias pinnata* (aamra), *Emblica officinalis* (aavala), *Wrightia tomentosa* (indrajao), *Tamarindus indica* (emli), *Sterculia villosa* (udal), *Bauhinia variegata* (kachmar), *Flacourtia indica* (katail [kandaii]), *Zizyphus xyloyna* (kathber), *Haplohragma adenophyllum* (kath sagaon), *Marica sapida* (kafal), *Buchanania lanzan* (kathbhlava), *Buchanania latifolia* (pyalcharoji), *Gmelina arborea* (kamhar [gamhar]), *Albizia odoratissima* (kalasiras), *Acacia farnesiana* (kinkar), *Careya arborea* (kumbhi), *Ficus cunia* (kumiya), *Schleichera oleosa* (kusum), *Holarrhena antidysenterica* (kuda), *Phoebe lanceolata* (kakra), *Muchilus odoratissima* (kaola), *Holoptelea integrifolia* (kanju), *Celtis tetrandra* (kharik), *Bauhinia malabarica* (khatava), *Berdelia retusa* (khaza), *Ficus infectoria*, *Ficus rumphii* (khabar, pakar), *Sapium insigne* (kheena), *Acacia Catechu* (kher), *Bauhinia purpurea* (kherwall), *Trewia nudiflora* (kutel), *Ficus racemosa* (gular), *Boehmeria rugulosa* (gethi), *Bridelia ratusa* (goli [ekdanya]), *Ehretia laevis* (chamror [ichoda]), *Casearia elliptica* (chilla), *Wendlandia exserta* (chila [tirchunya]), *Diploknema butyracea* (chura), *Pinus roxburghii* (chir), *Alstonia Scholaris* (chitvan [chiun]), *Syzygium cumini* (jamun), *Trema orientalis* (jeevanti), *Putranjiva roxburghii* (jooti), *Tamarix dioica* (jhau), *Lennea coromandelica* (jhingan), *Cinnamomum tamala* (dalchini [trjpatta]), *Garuga pinnata* (titmira [kharpat]), *Miliusa velutina* (domsaal), *Butea monosperma* (dhak), *Elaeotendron glaucum* (dhibri), *Sapium sebiferum* (tarcharbi), *Oroxylum indicum* (tarloo [tasriya]), *Cocculus laurifolius* (tilfora), *Ficus roxburghii* (timla), *Toona ciliata*, *Cedrela toona* (tun), *Diospyros tomentosa* (tandu), *Gardenia turgida* (thanela), *Grewia elastica* (thaman), *Woodfordia fruticosa* (dhaula), *Erythrina suberosa* (dhauladhak), *Lagerstroemia parviflora* (dhor), *Azadirachta indica* (neem), *Stereospermum suaveolens* (padal), *Bischofia javanica* (panisemal), *Dalbergia lonceolaria* (passi [bandhar]), *Ficus religiosa* (pipal), *Kydia calycina* (pula [patta]), *Broussonetia papyrifera* (paper malvari), *Mitragyna pravifolia* (fald), *Grewia hainesia* (farasen), *Acacia nilotica* (babool), *Terminalia bellerica* (bahera), *Melia azedarach* (bakein), *Crataeva religiosa* (barna [baruna]), *Ficus bengalensis* (banratha [bargad]), *Anogeissus latifolia* (baakali), *Pterocarpus marsupium* (bijaysaal), *Ficus scandens* (betuli), *Rhododendron arboreum* (burash), *Quercus leucotrichophora* (baanj), *Aegle marmelos* (bel), *Zizyphus mauritiana*, *Zizyphus jujuba* (ber), *Hymenodictyon excelsum* (borang), *Semecarpus anacardium* (bhlava), *Grewia oppositifolia* (bhimal), *Madhuca indica* (mahuva), *Zizyphus xyloira* (makida), *Litsea glutinosa* (maida), *Randia dumetorum* (maninfal), *Eucalyptus hybrid* (eucalyptus [safeda]), *Mallotus philippensis* (rohani), *Cordia dichotoma*, *Cordia myxa* (lasora), *Casearia graveolens* (lalchila), *Morus alba* (sahtut [tutari]), *Dalbergia sissoo* (shisu [shisam]), *Xylosma longifolium* (shallu), *Shorea robusta* (saal), *Ougeinia oojeinensis* (saadan), *Tectona grandis* (saogaon), *Albizia chinensis* (siras [kala]), *Albizia procera* (siris [safed]), *Moringa oleifera* (seazna), *Bombax ceiba* (semal), *Terminalia alata* (sain [ashna]), *Nyctanthes arborescens* (hersringar), *Adina cordifolia* (haldu), *Terminalia chebula* (harra [harad]), etc;

AND WHEREAS, among the mega-fauna found in this region, the most important ones are tigers, elephants, leopards, sloth bears, and numerous herbivores and the diverse fauna of this area enjoys equally diverse floral diversity, which can be estimated considering the fact that the area has twenty-seven types and sub-types of Champion and Seth classified forests;

AND WHEREAS, the fauna recorded from the Nandhaur Wildlife Sanctuary are Rhesus macaque (*Macaca mulatta*), common langur (*Presbytis entellus*), jungle cat (*Felis chaus*), tiger (*Panthera tigris*), common mongoose (*Hertestes edwardsi*), small indian mongoose (*Hertestes auropunctatus*), jackal (*Canis aureus*), Indian fox (*Vulpes bengalensis*), sloth bear (*Melursus ursinus*), small Indian civet (*Viverricula indica*), blue bull (*Boselaphus tragocamelus*), barking deer (*Muntiacus muntjak*), spotted deer (*Axis axis*),

sambhar (*Cervus unicolor*), wild pig (*Sus scrofa*), five striped palm squirrel (*Funambulus pannanti*), Indian field mouse (*Musbooduga*), common house rat (*Rattus rattus*), house mouse (*Mus musculus*), porcupine (*Hystrix indica*), the grey musk shrew (*Suncus murinus*), Rufoustailed hare (*Lepus nigricollis ruficaudatus*), flying fox (*Pteropus giganteus*), fruit bat (*Rousettus leschenaulti*), goral (*Naemorhedus goral*), Indian pangolin (*Manis crasichodonta*), Asian elephant (*Elephas maximus*), common palm civet (*Paradoxurus hermaphroditus*), red giant flying squirrel (*Petaurista petaurista*), hispid hare (*Caprolagus hiseldus*), Indian hare (*Lepus nigricollis*), serow (*Capricornis sumatraensis*), etc;

AND WHEREAS, it is necessary to conserve and protect the area, the extent and boundaries of Nandhaur Wildlife Sanctuary which are specified in paragraph 1 as Eco-sensitive Zone from ecological, environmental and biodiversity point of view and to prohibit industries or class of industries and their operations and processes in the said Eco-sensitive Zone;

NOW, THEREFORE, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) and clauses (v) and (xiv) of sub-section (2) and sub-section (3) of Section 3 of the Environment (Protection) Act 1986 (29 of 1986) (hereafter in this notification referred to as the Environment Act) read with sub-rule (3) of rule 5 of the Environment (Protection) Rules, 1986, the Central Government hereby notifies an area to an extent varying from 0.7 kilometres to 15.0 kilometres around the boundary of Nandhaur Wildlife Sanctuary, in Nainital and Champawat districts in the State of Uttarakhand as the Eco-sensitive Zone (hereafter in this notification referred to as the Eco-sensitive Zone) details of which are as under, namely: -

- 1. Extent and boundaries of Eco-sensitive Zone.** – (1) The Eco-sensitive Zone shall be to an extent of 0.7 kilometres to 15.0 kilometres around the boundary of Nandhaur Wildlife Sanctuary and the area of the Eco-sensitive Zone is 540.267 square kilometres. The detail area of the Eco-sensitive Zone are given as:

Haldwani Forest Division	: 270.175 square kilometers;
Champawat Forest Division	: 100.880 square kilometers;
Tarai East Forest Division	: 167.103 square kilometers;
Revenue Area of 2 villages	: 1.9518 square kilometers;
Van panchayat area	: 0.1574 square kilometers.

- (2) The boundary description of Nandhaur Wildlife Sanctuary and its Eco-sensitive Zone is appended in **Annexure-I**.
- (3) The maps of the Nandhaur Wildlife Sanctuary demarcating Eco-sensitive Zone along with boundary details and latitudes and longitudes are appended as **Annexure-IIA, Annexure-IIB, Annexure-IIC, Annexure-IID and Annexure-IIIE**.
- (4) List of geo-coordinates of the boundary of Nandhaur Wildlife Sanctuary and Eco-sensitive Zone are given in Table A and Table B of **Annexure III**.
- (5) The list of villages falling in the proposed Eco-sensitive Zone along with their geo co-ordinates at prominent points is appended as **Annexure-IVA and Annexure-IVB**.
- 2. Zonal Master Plan for Eco-sensitive Zone.**– (1) The State Government shall, for the purposes of the Eco-sensitive Zone prepare a Zonal Master Plan within a period of two years from the date of publication of this notification in the Official Gazette, in consultation with local people and adhering to the stipulations given in this notification for approval of the competent authority of State.
 - (2) The Zonal Master Plan for the Eco-sensitive Zone shall be prepared by the State Government in such manner as is specified in this notification and also in consonance with the relevant Central and State laws and the guidelines issued by the Central Government, if any.
 - (3) The Zonal Master Plan shall be prepared in consultation with the following Departments of the State Government, for integrating the ecological and environmental considerations into the said plan:-
 - (i) Environment;
 - (ii) Forest and Wildlife;
 - (iii) Agriculture;

- (iv) Revenue;
- (v) Urban Development;
- (vi) Tourism;
- (vii) Rural Development;
- (viii) Irrigation and Flood Control;
- (ix) Municipal;
- (x) Panchayati Raj; and
- (xi) Public Works Department.

- (4) The Zonal Master Plan shall not impose any restriction on the approved existing land use, infrastructure and activities, unless so specified in this notification and the Zonal Master Plan shall factor in improvement of all infrastructure and activities to be more efficient and eco-friendly.
- (5) The Zonal Master Plan shall provide for restoration of denuded areas, conservation of existing water bodies, management of catchment areas, watershed management, groundwater management, soil and moisture conservation, needs of local community and such other aspects of the ecology and environment that need attention.
- (6) The Zonal Master Plan shall demarcate all the existing worshipping places, villages and urban settlements, types and kinds of forests, agricultural areas, fertile lands, green area, such as, parks and like places, horticultural areas, orchards, lakes and other water bodies with supporting maps giving details of existing and proposed land use features.
- (7) The Zonal Master Plan shall regulate development in Eco-sensitive Zone and adhere to prohibited and regulated activities listed in the Table in paragraph 4 and also ensure and promote eco-friendly development for security of local communities' livelihood.
- (8) The Zonal Master Plan shall be co-terminus with the Regional Development Plan.
- (9) The Zonal Master Plan so approved shall be the reference document for the Monitoring Committee for carrying out its functions of monitoring in accordance with the provisions of this notification.

3. **Measures to be taken by the State Government.**— The State Government shall take the following measures for giving effect to the provisions of this notification, namely:—

- (1) **Land use.**— (a) Forests, horticulture areas, agricultural areas, parks and open spaces earmarked for recreational purposes in the Eco-sensitive Zone shall not be used or converted into areas for commercial or residential or industrial activities:

Provided that the conversion of agricultural and other lands, for the purpose other than that specified at part (a) above, within the Eco-sensitive Zone may be permitted on the recommendation of the Monitoring Committee, and with the prior approval of the competent authority under Regional Town Planning Act and other rules and regulations of Central Government or State Government as applicable and vide provisions of this Notification, to meet the residential needs of the local residents and for activities such as:—

- (i) widening and strengthening of existing roads and construction of new roads;
- (ii) construction and renovation of infrastructure and civic amenities;
- (iii) small scale industries not causing pollution;
- (iv) cottage industries including village industries; convenience stores and local amenities supporting eco-tourism including home stay; and
- (v) promoted activities given under paragraph 4:

Provided further that no use of tribal land shall be permitted for commercial and industrial development activities without the prior approval of the competent authority under Regional Town Planning Act and other rules and regulations of the State Government and without compliance of the provisions of Article 244 of the Constitution or the law for the time being in force, including the Scheduled Tribes and Other Traditional Forest Dwellers (Recognition of Forest Rights) Act, 2006 (2 of 2007):

Provided also that any error appearing in the land records within the Eco-sensitive Zone shall be corrected by the State Government, after obtaining the views of Monitoring Committee, once in each case and the correction of said error shall be intimated to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change:

Provided also that the correction of error shall not include change of land use in any case except as provided under this sub-paragraph.

(b) Efforts shall be made to reforest the unused or unproductive agricultural areas with afforestation and habitat restoration activities.

(2) **Natural water bodies.**—The catchment areas of all natural springs shall be identified and plans for their conservation and rejuvenation shall be incorporated in the Zonal Master Plan and the guidelines shall be drawn up by the State Government in such a manner as to prohibit development activities at or near these areas which are detrimental to such areas.

(3) **Tourism or Eco-tourism.**— (a) All new eco-tourism activities or expansion of existing tourism activities within the Eco-sensitive Zone shall be as per the Tourism Master Plan for the Eco-sensitive Zone.

(b) The Eco-Tourism Master Plan shall be prepared by the State Department of Tourism in consultation with State Departments of Environment and Forests.

(c) The Tourism Master Plan shall form a component of the Zonal Master Plan.

(d) The Tourism Master Plan shall be drawn based on the study of carrying capacity of the Eco-sensitive Zone.

(e) The activities of eco-tourism shall be regulated as under, namely:—

(i) new construction of hotels and resorts shall not be allowed within one kilometre from the boundary of the protected area or upto the extent of the Eco-sensitive Zone whichever is nearer:

Provided that beyond the distance of one kilometre from the boundary of the protected area till the extent of the Eco-sensitive Zone, the establishment of new hotels and resorts shall be allowed only in pre-defined and designated areas for eco-tourism facilities as per Tourism Master Plan;

(ii) all new tourism activities or expansion of existing tourism activities within the Eco-sensitive Zone shall be in accordance with the guidelines issued by the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change and the eco-tourism guidelines issued by National Tiger Conservation Authority (as amended from time to time) with emphasis on eco-tourism, eco-education and eco-development;

(iii) until the Zonal Master Plan is approved, development for tourism and expansion of existing tourism activities shall be permitted by the concerned regulatory authorities based on the actual site specific scrutiny and recommendation of the Monitoring Committee and no new hotel, resort or commercial establishment construction shall be permitted within Eco-sensitive Zone area.

(4) **Natural heritage.**— All sites of valuable natural heritage in the Eco-sensitive Zone, such as the gene pool reserve areas, rock formations, waterfalls, springs, gorges, groves, caves, points, walks, rides, cliffs, etc. shall be identified and a heritage conservation plan shall be drawn up for their preservation and conservation as a part of the Zonal Master Plan.

(5) **Man-made heritage sites.**— Buildings, structures, artefacts, areas and precincts of historical, architectural, aesthetic, and cultural significance shall be identified in the Eco-sensitive Zone and heritage conservation plan for their conservation shall be prepared as part of the Zonal Master Plan.

(6) **Noise pollution.**— Prevention and control of noise pollution in the Eco-sensitive Zone shall be complied in accordance with the provisions of the Noise Pollution (Regulation and Control) Rules, 2000 under the Environment Act.

(7) **Air pollution.**— Prevention and control of air pollution in the Eco-sensitive Zone shall be complied in accordance with the provisions of the Air (Prevention and Control of Pollution) Act, 1981 (14 of 1981) and the rules made thereunder.

- (8) **Discharge of effluents.-** Discharge of treated effluent in Eco-sensitive Zone shall be in accordance with the provisions of the General Standards for Discharge of Environmental Pollutants covered under the Environment Act and the rules made thereunder or standards stipulated by State Government whichever is more stringent.
- (9) **Solid wastes.-** Disposal and Management of solid wastes shall be as under:-
- (a) the solid waste disposal and management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the Solid Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number S.O. 1357 (E), dated the 8th April, 2016; the inorganic material may be disposed in an environmental acceptable manner at site identified outside the Eco-sensitive Zone;
 - (b) safe and Environmentally Sound Management (ESM) of Solid wastes in conformity with the existing rules and regulations using identified technologies may be allowed within Eco-sensitive Zone.
- (10) **Bio-Medical Waste.-** Bio Medical Waste Management shall be as under:-
- (a) the Bio-Medical Waste disposal in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the Bio-Medical Waste Management, Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R 343 (E), dated the 28th March, 2016;
 - (b) safe and Environmentally Sound Management of Bio-Medical Wastes in conformity with the existing rules and regulations using identified technologies may be allowed within the Eco-sensitive Zone.
- (11) **Plastic waste management.-** The plastic waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the Plastic Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R. 340(E), dated the 18th March, 2016, as amended from time to time.
- (12) **Construction and demolition waste management.-** The construction and demolition waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the Construction and Demolition Waste Management Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R. 317(E), dated the 29th March, 2016, as amended from time to time.
- (13) **E-waste.-** The e - waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the E-Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change, as amended from time to time.
- (14) **Vehicular traffic.-** The vehicular movement of traffic shall be regulated in a habitat friendly manner and specific provisions in this regard shall be incorporated in the Zonal Master Plan and till such time as the Zonal Master plan is prepared and approved by the Competent Authority in the State Government, the Monitoring Committee shall monitor compliance of vehicular movement under the relevant Acts and the rules and regulations made thereunder.
- (15) **Vehicular pollution.-** Prevention and control of vehicular pollution shall be in compliance with applicable laws and efforts shall be made for use of cleaner fuels.
- (16) **Industrial units.-** (i) On or after the publication of this notification in the Official Gazette, no new polluting industries shall be permitted to be set up within the Eco-sensitive Zone.
- (ii) Only non-polluting industries shall be allowed within Eco-sensitive Zone as per the classification of Industries in the guidelines issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016, unless so specified in this notification, and in addition, the non-polluting cottage industries shall be promoted.
- (17) **Protection of hill slopes.-** The protection of hill slopes shall be as under:-
- (a) the Zonal Master Plan shall indicate areas on hill slopes where no construction shall be permitted;
 - (b) construction on existing steep hill slopes or slopes with a high degree of erosion shall not be permitted.

- 4. List of activities prohibited or to be regulated within Eco-sensitive Zone.-** All activities in the Eco sensitive Zone shall be governed by the provisions of the Environment Act and the rules made there under including the Coastal Regulation Zone, 2011 and the Environmental Impact Assessment Notification, 2006 and other applicable laws including the Forest (Conservation) Act, 1980 (69 of 1980), the Indian Forest Act, 1927 (16 of 1927), the Wildlife (Protection) Act 1972 (53 of 1972), and amendments made thereto and be regulated in the manner specified in the Table below, namely:-

TABLE

S. No.	Activity	Description
(1)	(2)	(3)
A. Prohibited Activities		
1.	Commercial mining, stone quarrying and crushing units.	(a) All new and existing mining (minor and major minerals), stone quarrying and crushing units are prohibited with immediate effect except for meeting the domestic needs of bona fide local residents including digging of earth for construction or repair of houses and for manufacture of country tiles or bricks for housing and for personal consumption; (b) The mining operations shall be carried out in accordance with the order of the Hon'ble Supreme Court dated the 4 th August, 2006 in the matter of T.N. Godavarman Thirumulpad Vs. UOI in W.P.(C) No.202 of 1995 and dated the 21 st April, 2014 in the matter of Goa Foundation Vs. UOI in W.P.(C) No.435 of 2012.
2.	Setting of industries causing pollution (Water, Air, Soil, Noise, etc.).	New industries and expansion of existing polluting industries in the Eco-sensitive Zone shall not be permitted: Provided that non-polluting industries shall be allowed within Eco-sensitive Zone as per classification of Industries in the guidelines issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016, unless otherwise specified in this notification and in addition the non-polluting cottage industries shall be promoted.
3.	Establishment of major hydro-electric project.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
4.	Use or production or processing of any hazardous substances.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
5.	Discharge of untreated effluents in natural water bodies or land area.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
6.	Setting up of new saw mills.	New or expansion of existing saw mills shall not be permitted within the Eco-sensitive Zone.
7.	Commercial use of firewood.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
8.	Use of polythene bags.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
9.	Setting up of brick kilns.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.

S. No.	Activity	Description
(1)	(2)	(3)
B. Regulated Activities		
10.	Commercial establishment of hotels and resorts.	<p>No new commercial hotels and resorts shall be permitted within one kilometer of the boundary of the protected area or upto the extent of Eco-sensitive Zone, whichever is nearer, except for small temporary structures for eco-tourism activities:</p> <p>Provided that, beyond one kilometer from the boundary of the protected area or upto the extent of Eco-sensitive Zone whichever is nearer, all new tourist activities or expansion of existing activities shall be in conformity with the Tourism Master Plan and guidelines as applicable.</p>
11.	Construction activities.	<p>(a) New commercial construction of any kind shall not be permitted within one kilometer from the boundary of the protected area or upto extent of the Eco-sensitive Zone, whichever is nearer:</p> <p>Provided that, local people shall be permitted to undertake construction in their land for their use including the activities mentioned in sub-paragraph (1) of paragraph 3 as per building bye-laws to meet the residential needs of the local residents.</p> <p>Provided further that the construction activity related to small scale industries not causing pollution shall be regulated and kept at the minimum, with the prior permission from the competent authority as per applicable rules and regulations, if any.</p> <p>(b) Beyond one kilometer it shall be regulated as per the Zonal Master Plan.</p>
12.	Small scale non polluting industries.	Non polluting industries as per classification of industries issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016 and non-hazardous, small-scale and service industry, agriculture, floriculture, horticulture or agro-based industry producing products from indigenous materials from the Eco-sensitive Zone shall be permitted by the competent Authority.
13.	Felling of trees.	<p>a) There shall be no felling of trees in the forest or Government or revenue or private lands without prior permission of the Competent Authority in the State Government.</p> <p>b) The felling of trees shall be regulated in accordance with the provisions of the concerned Central or State Act and the rules made thereunder.</p>
14.	Collection of Forest produce or Non-Timber Forest produce.	Regulated as per the applicable laws.
15.	Erection of electrical and communication towers and laying of cables and other infrastructures.	Regulated under applicable laws (underground cabling may be promoted).
16.	Infrastructure including civic	Taking measures of mitigation as per the applicable

S. No.	Activity	Description
(1)	(2)	(3)
	amenities.	laws, rules and regulations available guidelines.
17.	Widening and strengthening of existing roads and construction of new roads.	Taking measures of mitigation as per the applicable laws, rules and regulation and available guidelines.
18.	Undertaking other activities related to tourism like flying over the Eco-sensitive Zone area by hot air balloon, helicopter, drones, Microlites, etc.	Regulated as per the applicable laws.
19.	Protection of hill slopes and river banks.	Regulated as per the applicable laws.
20.	Movement of vehicular traffic at night.	Regulated for commercial purpose under applicable laws.
21.	Ongoing agriculture and horticulture practices by local communities along with dairies, dairy farming, aquaculture and fisheries.	Permitted as per the applicable laws for use of locals.
22.	Establishment of large-scale commercial livestock and poultry farms by firms, corporate and companies.	Regulated (except otherwise provided) as per the applicable laws except for meeting local needs.
23.	Discharge of treated waste water or effluents in natural water bodies or land area.	The discharge of treated waste water or effluents shall be avoided to enter into the water bodies and efforts shall be made for recycle and reuse of treated waste water. Otherwise the discharge of treated waste water or effluent shall be regulated as per the applicable laws.
24.	Commercial extraction of surface and ground water.	Regulated as per the applicable laws.
25.	Solid waste management.	Regulated as per the applicable laws.
26.	Introduction of exotic species.	Regulated as per the applicable laws.
27.	Eco-tourism.	Regulated as per the applicable laws.
28.	Commercial sign boards and hoardings.	Regulated as per the applicable laws.
C. Promoted Activities		
29.	Rain water harvesting.	Shall be actively promoted.
30.	Organic farming.	Shall be actively promoted.
31.	Adoption of green technology for all activities.	Shall be actively promoted.
32.	Cottage industries including village artisans, etc.	Shall be actively promoted.
33.	Use of renewable energy and fuels.	Bio-gas, solar light etc. shall be actively promoted.
34.	Agro-Forestry.	Shall be actively promoted.
35.	Plantation of Horticulture and Herbals.	Shall be actively promoted.

S. No.	Activity	Description
(1)	(2)	(3)
36.	Use of eco-friendly transport.	Shall be actively promoted.
37.	Skill Development.	Shall be actively promoted.
38.	Restoration of degraded land/ forests/ habitat.	Shall be actively promoted.
39.	Environmental awareness.	Shall be actively promoted.

5. Monitoring Committee for Monitoring the Eco-sensitive Zone Notification.- For effective monitoring of the provisions of this notification under sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986, the Central Government hereby constitutes a Monitoring Committee, comprising of the following, namely:-

S N	Constituent of the Monitoring Committee	Designation
(i)	Collector, Nainital	Chairman, ex officio
(ii)	Representative of Collector of Champawat	Member;
(iii)	Representative of the Department of Environment, Government of Uttarakhand	Member;
(iv)	Representative of the Department of Urban Development, Government of Uttarakhand	Member;
(v)	Regional officer, Uttarakhand State Pollution Control Board	Member;
(vi)	A representative of Non-governmental Organisation working in the field of wildlife conservation to be nominated by the State Government	Member;
(vii)	One expert in the area of ecology & environment to be nominated by the State Government for a term of one year in each case	Member;
(viii)	Divisional Forest Officer, Haldwani Forest Division	Member-Secretary.

6. Terms of reference. – (1) The Monitoring Committee shall monitor the compliance of the provisions of this notification.

- (2) The tenure of the Monitoring committee shall be for three years or till the re-constitution of the new Committee by the State Government and subsequently the Monitoring Committee shall be constituted by the State Government.
- (3) The activities that are covered in the Schedule to the notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment and Forests number S.O. 1533 (E), dated the 14th September, 2006, and are falling in the Eco-sensitive Zone, except for the prohibited activities as specified in the Table under paragraph 4 thereof, shall be scrutinised by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change for prior environmental clearances under the provisions of the said notification.
- (4) The activities that are not covered in the Schedule to the notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment and Forests number S.O. 1533 (E), dated the 14th September, 2006 and are falling in the Eco-sensitive Zone, except for the prohibited activities as specified in the Table under paragraph 4 thereof, shall be scrutinised by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the concerned regulatory authorities.

- (5) The Member-Secretary of the Monitoring Committee or the concerned Deputy Commissioner(s) shall be competent to file complaints under section 19 of the Environment Act, against any person who contravenes the provisions of this notification.
 - (6) The Monitoring Committee may invite representatives or experts from concerned Departments, representatives from industry associations or concerned stakeholders to assist in its deliberations depending on the requirements on issue to issue basis.
 - (7) The Monitoring Committee shall submit the annual action taken report of its activities as on the 31st March of every year by the 30th June of that year to the Chief Wildlife Warden in the State as per proforma appended at **Annexure V**.
 - (8) The Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change may give such directions, as it deems fit, to the Monitoring Committee for effective discharge of its functions.
7. The Central Government and State Government may specify additional measures, if any, for giving effect to provisions of this notification.
8. The provisions of this notification shall be subject to the orders, if any passed or to be passed by the Hon'ble Supreme Court of India or High Court or the National Green Tribunal.

[F. No. 25/113/2015-ESZ-RE]

Dr. SATISH C. GARKOTI, Scientist 'G'

ANNEXURE- I

BOUNDARY DESCRIPTION OF ECOSENSITIVE ZONE AROUND NANDHAUR WILDLIFE SANCTUARY IN THE STATE UTTARKHAND

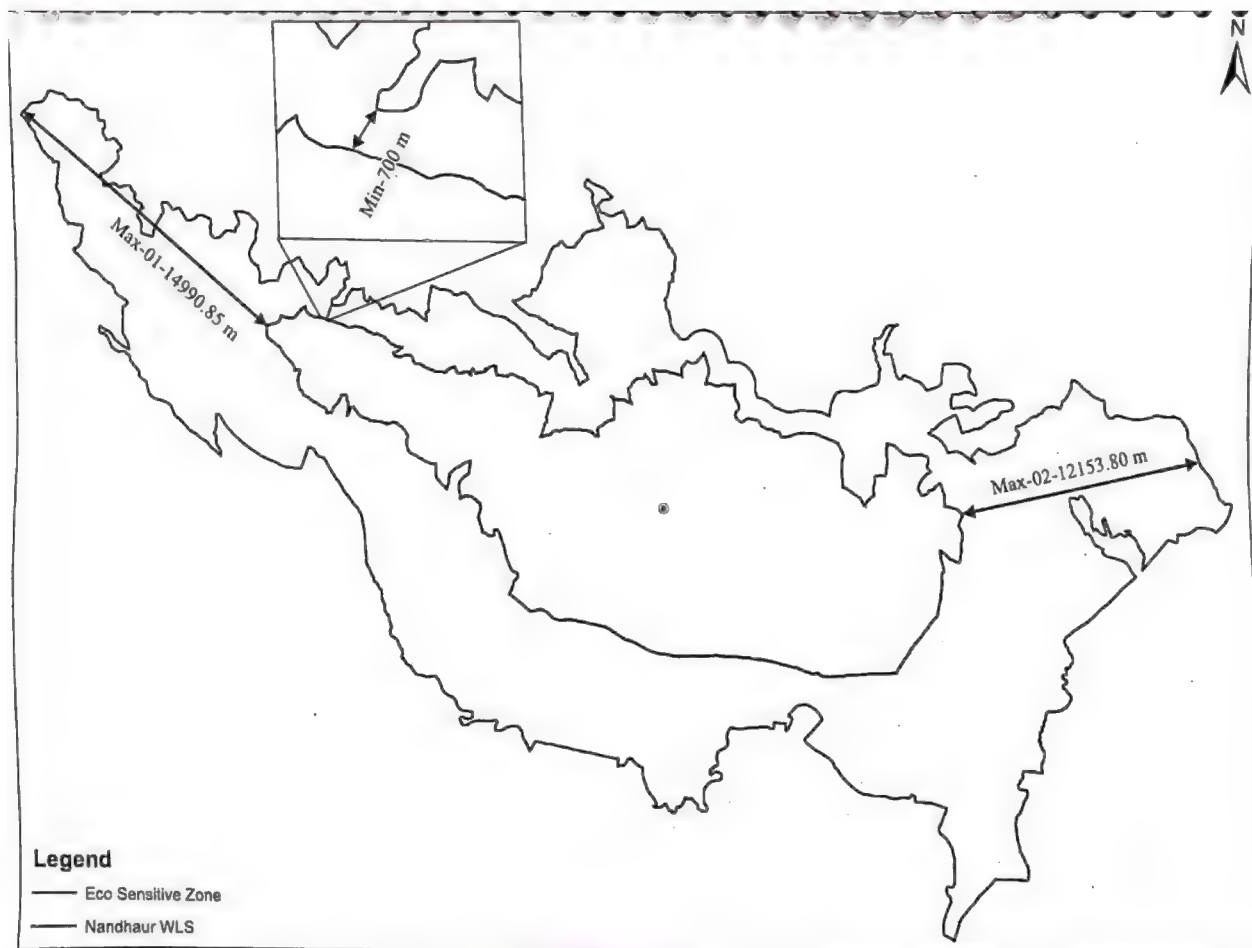
East Side - Sarda North 22,23, Mathiabanjh 3,4, Chhini 53, West Bastia 1,2,3, East Bastia 1,2,3,4, Naghan 8, Baramdeo A2,A1, Kakrali B, A, D, North Guliapani 4b, South Guliapani 1,2,3, East Kilpura A, B, C;

West Side - Kalega-6,1, Nandhour-1 Sumanthapla-2, Lakhanmandi-5a, 4c, 4a,4b,3,2a,1a,8b, Dolpokhara- 5, 8b, 8c, 8a, 7a, 7b, 6b, 6a, Kalukhera- 5,6,3 Ratighat- 3a, 1a, 1b, 2b, 2a, 3b, 3a,4, 5, 6a, 6b Garhkharak block c.no.-1, 2, 3, 4, 5a, 5b Simlia block c.no.-5b, 4c, 4a, 3, 2, 1 Patrani block c.no.- 4, West Lobchula 1a, 2b, 2a, 3a,4a;

North Side - East Lobchula 1,2,3, Gauniyaroa 1,13, North Kholgarh 1, Upraula Gauniyaroa 1,2, South Loweranala 1,4,5, North Loweranala 4b, 3b, 2b Kundal 1,4,5,8 Aaligarh 1b, 1a, Betlad 5a. 5b (part),2a(part),1a(part),1b(part), Durgapipal 11(part), Sarda North 4(part),5(part),6(part);

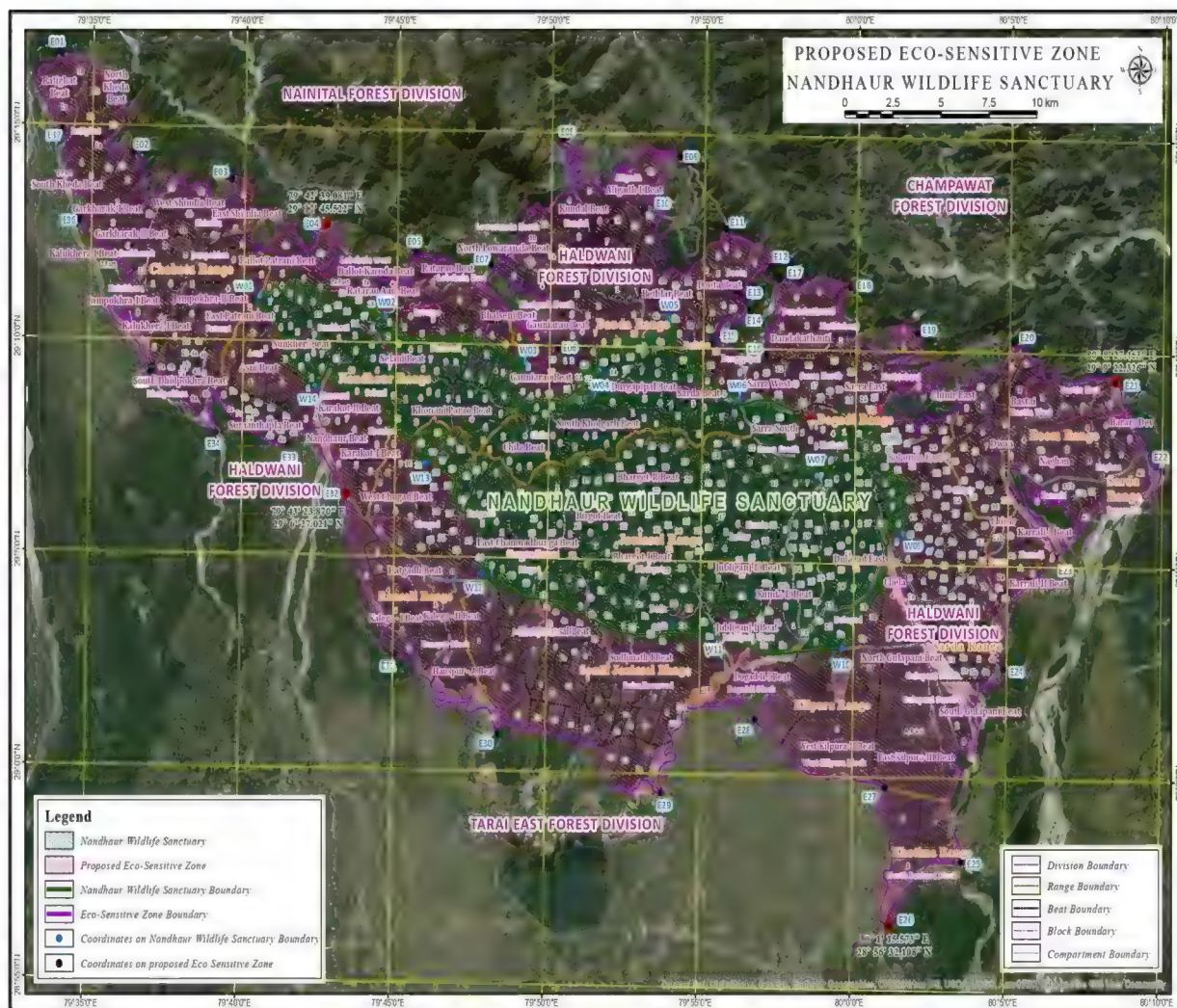
South Side - North Banbasa Block 5,8,7, West Kilpura A, Dogari block-1 & 2, Sudlimath Block I, 11b, Sudlimath Block-II-2b,2a,1b,1a, Beda Reserve -3 East Jaulasal- 16,15,14,13,12, West Jaulasal- 6b, Hanspur block-C , Kalega-7

ANNEXURE- IIA

MAP OF NANDHAUR WILDLIFE SANCTUARY AND ITS ECO-SENSITIVE ZONE ALONG
WITH LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS

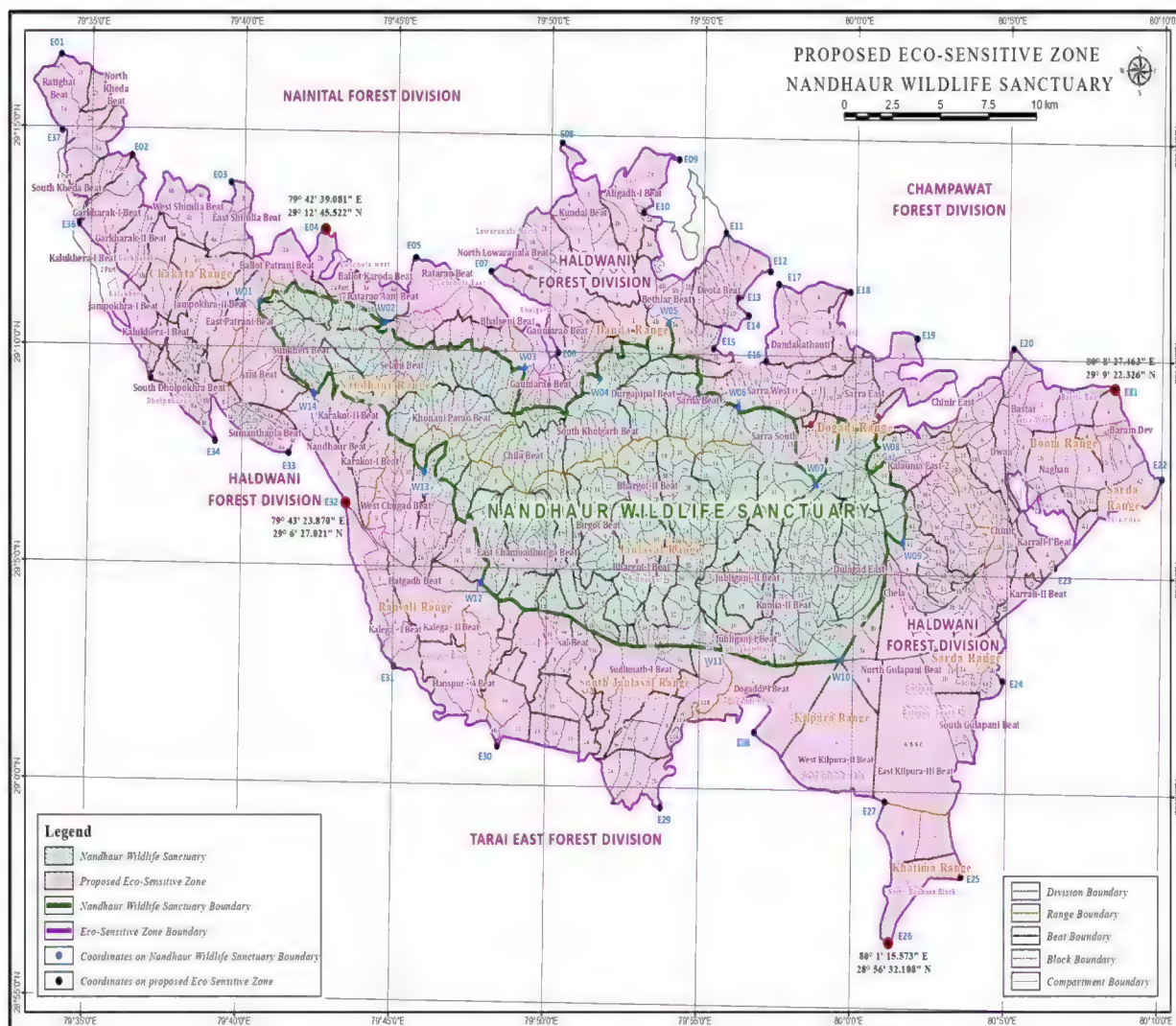
ANNEXURE- IIB

**GOOGLE MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE OF NANDHAUR WILDLIFE SANCTUARY
ALONG WITH LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS**

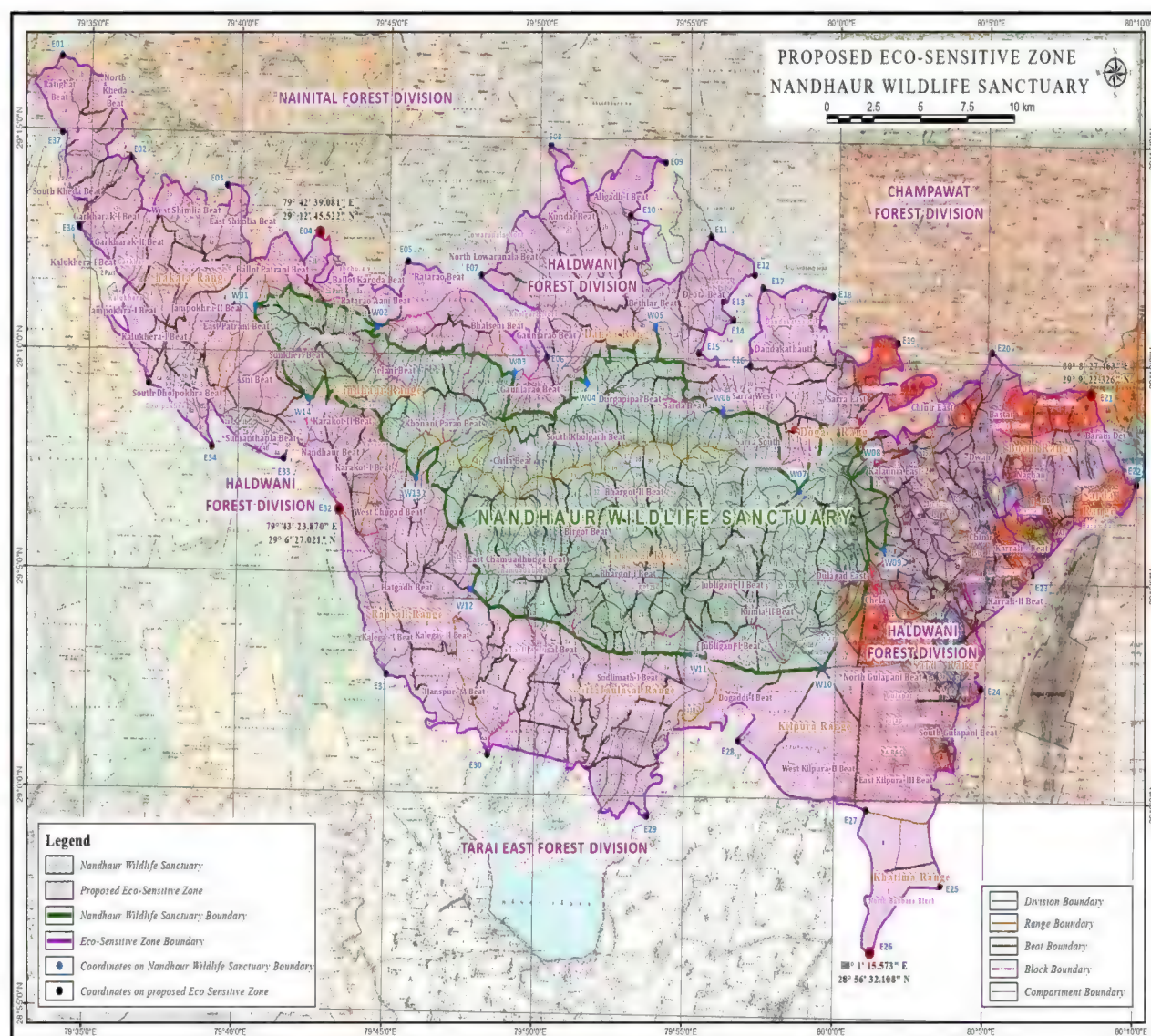


ANNEXURE- IIC

**MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE OF NANDHAUR WILDLIFE SANCTUARY ALONG WITH
LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS ON SURVEY OF INDIA (SOI)
TOPOSHEET**

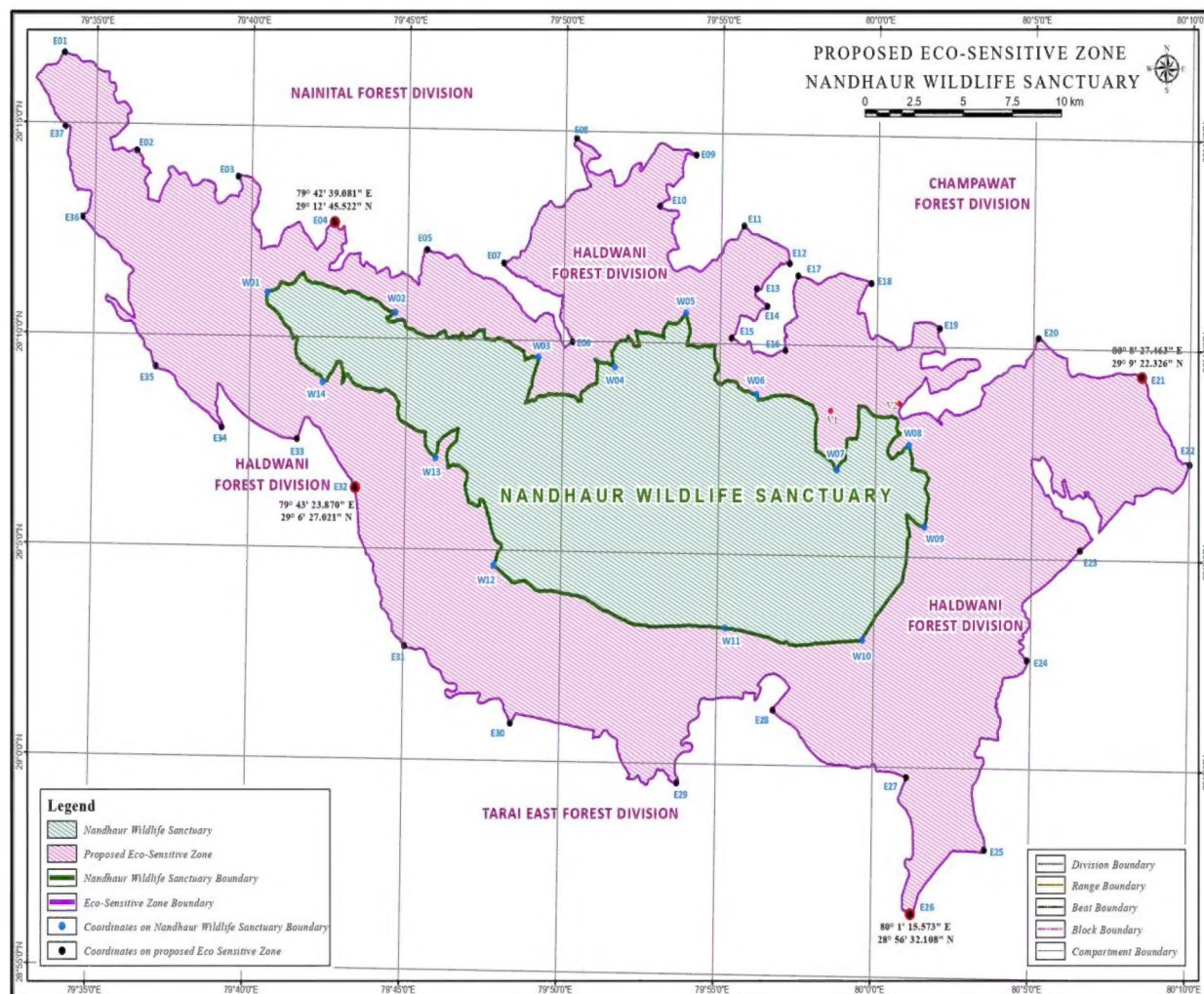


**MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE OF NANDHAUR WILDLIFE SANCTUARY ALONG WITH
LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS ON SURVEY OF INDIA (SOI)
TOPOSHEET**



ANNEXURE- IIE

**MAP OF NANDHAUR WILDLIFE SANCTUARY AND ITS ECO-SENSITIVE ZONE ALONG
WITH LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS**



ANNEXURE-III

**TABLE A: GEO- COORDINATES OF PROMINENT LOCATIONS OF NANDHAUR WILDLIFE
SANCTUARY**

Point	Longitude	Latitude	Description
W01	79° 40' 31.695" E	29° 11' 3.884" N	Nandhaur WLS
W02	79° 44' 37.284" E	29° 10' 38.038" N	Nandhaur WLS
W03	79° 49' 12.193" E	29° 9' 37.718" N	Nandhaur WLS
W04	79° 51' 38.832" E	29° 9' 25.676" N	Nandhaur WLS
W05	79° 53' 53.049" E	29° 10' 44.254" N	Nandhaur WLS
W06	79° 56' 10.269" E	29° 8' 49.470" N	Nandhaur WLS

W07	79° 58' 45.739" E	29° 7' 3.473" N	Nandhaur WLS
W08	80° 1' 2.823" E	29° 7' 40.210" N	Nandhaur WLS
W09	80° 1' 34.977" E	29° 5' 44.964" N	Nandhaur WLS
W10	79° 59' 37.921" E	29° 3' 1.139" N	Nandhaur WLS
W11	79° 55' 15.137" E	29° 3' 15.607" N	Nandhaur WLS
W12	79° 47' 50.944" E	29° 4' 39.597" N	Nandhaur WLS
W13	79° 45' 57.253" E	29° 7' 11.210" N	Nandhaur WLS
W14	79° 42' 19.679" E	29° 8' 57.363" N	Nandhaur WLS

TABLE B: GEO-COORDINATES OF PROMINENT LOCATIONS OF ECO-SENSITIVE ZONE

Point	Longitude	Latitude	Description
E01	79° 33' 57.762" E	29° 16' 39.994" N	Eco Sensitive zone
E02	79° 36' 19.052" E	29° 14' 23.009" N	Eco Sensitive zone
E03	79° 39' 33.453" E	29° 13' 48.082" N	Eco Sensitive zone
E04	79° 42' 39.081" E	29° 12' 45.522" N	Eco Sensitive zone
E05	79° 45' 36.564" E	29° 12' 8.292" N	Eco Sensitive zone
E06	79° 50' 17.169" E	29° 10' 0.514" N	Eco Sensitive zone
E07	79° 48' 4.071" E	29° 11' 51.318" N	Eco Sensitive zone
E08	79° 50' 20.665" E	29° 14' 50.935" N	Eco Sensitive zone
E09	79° 52' 1.722" E	29° 13' 58.015" N	Eco Sensitive zone
E10	79° 53' 13.318" E	29° 11' 2.581" N	Eco Sensitive zone
E11	79° 54' 38.887" E	29° 10' 30.784" N	Eco Sensitive zone
E12	79° 57' 43.191" E	29° 9' 15.266" N	Eco Sensitive zone
E13	79° 59' 48.190" E	29° 11' 30.730" N	Eco Sensitive zone
E14	80° 1' 59.701" E	29° 10' 27.968" N	Eco Sensitive zone
E15	80° 5' 8.790" E	29° 10' 16.371" N	Eco Sensitive zone
E16	80° 8' 27.463" E	29° 9' 22.326" N	Eco Sensitive zone
E17	80° 10' 0.297" E	29° 7' 18.207" N	Eco Sensitive zone
E18	80° 6' 32.886" E	29° 5' 13.986" N	Eco Sensitive zone
E19	80° 4' 52.771" E	29° 2' 35.607" N	Eco Sensitive zone
E20	80° 3' 35.373" E	28° 58' 4.653" N	Eco Sensitive zone
E21	80° 1' 15.573" E	28° 56' 32.108" N	Eco Sensitive zone
E22	80° 1' 4.867" E	28° 59' 46.918" N	Eco Sensitive zone
E23	79° 56' 47.563" E	29° 1' 19.672" N	Eco Sensitive zone

E24	79° 53' 46.660" E	28° 59' 33.923" N	Eco Sensitive zone
E25	79° 48' 26.818" E	29° 0' 54.202" N	Eco Sensitive zone
E26	79° 45' 2.150" E	29° 2' 42.193" N	Eco Sensitive zone
E27	79° 43' 23.870" E	29° 6' 27.021" N	Eco Sensitive zone
E28	79° 41' 31.539" E	29° 7' 34.821" N	Eco Sensitive zone
E29	79° 39' 7.687" E	29° 7' 49.656" N	Eco Sensitive zone
E30	79° 36' 59.523" E	29° 9' 14.706" N	Eco Sensitive zone
E31	79° 34' 35.786" E	29° 12' 46.539" N	Eco Sensitive zone
E32	79° 34' 0.471" E	29° 14' 55.206" N	Eco Sensitive zone

ANNEXURE-IVA

**LIST OF VILLAGES COMING UNDER ECO-SENSITIVE ZONE OF NANDHAUR WILDLIFE
SANCTUARY ALONG WITH GEO-COORDINATES**

Name	Village	Longitude	Latitude
Kathaul	V1	79° 58' 32.561" E	29° 8' 27.937" N
BakrialukiPatli	V2	80° 0' 44.337" E	29° 8' 39.672" N

ANNEXURE-IVB

**DETAILS OF THE VILLAGES COMING UNDER ECO-SENSITIVE ZONE OF NANDHAUR
WILDLIFE SANCTUARY ALONG REVENUE AREA AND BOUNDARY DESCRIPTION**

S. No.	Name of Village	Tehsil	Area of Panchayati Van inside the Village (Ha.)	Area of Revenue Village (Ha.)	Boundary
1	Kathoul	Purnagiri	-	50.040	North – North Sarda 16, South – Kathoul 1 &2, East – Kathoul 3, West-South Sarda 13
2	Bakriyal ki Pati (Nearest Village)		15.741	145.144	North-Bakriyal Civil Forest, South – Mathiyabanj 2, East – Mathiyabanj 3, West Budam
		Total	15.741	195.184	

ANNEXURE –V**Performa of Action Taken Report:**

1. Number and date of meetings.
2. Minutes of the meetings: (mention noteworthy points. Attach minutes of the meeting as separate Annexure).
3. Status of preparation of Zonal Master Plan including Tourism Master Plan.
4. Summary of cases dealt with rectification of error apparent on face of land record (Eco-sensitive Zone wise). Details may be attached as Annexure.
5. Summary of cases scrutinised for activities covered under the Environment Impact Assessment Notification, 2006 (Details may be attached as separate Annexure).
6. Summary of cases scrutinised for activities not covered under the Environment Impact Assessment Notification, 2006 (Details may be attached as separate Annexure).
7. Summary of complaints lodged under section 19 of the Environment (Protection) Act, 1986.
8. Any other matter of importance.